श्रीगणेशायनमः
अथसूरकृतविनयपत्रिकाप्रारं०
रागविलावल

करनीकरूणासिंधुकीकहतनवनिआवै कपटतरेपरसेवकीजन
नीगतिपावै दुषितगजेंद्रहिंजानिकेंआपुनउठिधावै कलि
मैनामप्रगटनीचताकीछानिछुवावै उग्रसेनकीदीनताप्रभु
केजियभावै कंसमारिराजाकियोआपुनसिरनावै वरूणपा
सतेंव्रजपतिहिंछिनमेंछुटकावै वहुतदोषमोसूरकेंहनाते
गहरूलगावै॥१॥ रागविलावल॥ माधौंवेभुजकहांइरा
ये जिन्हीभुजनिगोवर्द्धनधाख्यो सुरपतिगर्वनसाये जिन्ही
भुजनिकालीकोनाथ्यो कमलनाललैआये जिन्हीभुजनि
प्रहलादउवाख्योहिरणाक्षकोंधाये जिन्हीभुजनिगजदंतउपा
रेमथुराकंसढहाये जिन्हीभुजनिदांवरीवंधाये जमलाभुक
तिपठाये जिन्हहींभुजनिअघासुरमाख्यो गोसुतगायमिला
ये तिहिंभुजकीवलिजायसूरजनतिनकालोरिदिखाये॥२॥
रागविलावल॥ अपनेजानेमैंवहुतकरी कौनभातिह
रिकृपातुम्हारीसुकछुनस्वामीसमुझिपरी दूरिगयोदरशन
केकारनतुवमहिमाविभुताविसरी मनसावाचाकर्मअगो
चरसोमूरतिनहिंनयनधरी गुणविनुगुणीस्वरूपरूपविनु
नामविनाश्रीश्यामहरी कृपासिंधुअप राधअपरमितक्षम
हुसूरतेंसवविगरी॥३॥ रागविलावल ॥चकईरीचलु
चरणसरोवरजहांनप्रेमवियोग जहंभ्रमनिसाहोतिनहिक
वहूंवेसाअरसुखजोग सनकशेहंसमीनसेमुनिजननखरवि
प्रभाप्रकास प्रफुलितकमलनिमेषनशशिडरूगुञ्जतनिगम
सुवास जिंहिसरसुभगमुकतिमुक्ताफलसुकृतविमलजल

पीजै सोइसरछांडिकुबुद्धिविहंगनियहांकहारहिकीजै तहं
श्रीसहससहितनितक्रीडतशोभितसूरजदास अबनसुहा
यविषयरसछीलरवासमुद्रकीआस॥ ४॥ रागविलावल
तुम्हरौनामतजिप्रभुजगदीशसुतोकहौंमेरेऔरकहावलु
बुधिविवेकअनुमानआपुनेसुधौंकरहुसबसुकृतनिकोफ
लु वेदपुराणस्मृतिसंतनकीयहआधारमीनकोज्योंजलुअ
ष्टसिद्धिनवनिद्धिसूरकेसंपतिविनुसुखकछूकहालहु॥५॥
रागधनाश्री॥ सोकहाजुमैंनकियोजोपैतुमसोइसोइ
चितधरिहौ पतितपावनविरदप्रकटकौनभांतिकरिहौ।
जबतेंजगजनमुपायेजीवनामकहायो तबतेंसबऔगुणक
रिगुणनाकहिआयो सुकृतीशुचिसेवकजनकाहेनजियभा
वे प्रभुकीप्रभुताईयहहैदीनशरणपावै लाटलंपटसंतनिंद
ककपटीगुरुद्रोही जेतेकछुअपराधकहियतलागेसबमो
ही श्यामसुंदरकमलनयनसकलअंतर्यामी विनतीकहा
करैसूरकूरकुटिलकामी॥६॥ रागधनाश्री ॥ पति
तपावनहरिनामुतुह्मारोकौनेहूंधस्यो हौंतौदीनदुखितसं
सितरतहारेरटनपस्यो जीवजातनाजोनिरूधिरजलजबज
बजठरजस्यो तबहूंतेतुमनिकटतज्योनहिशतअपराधभ
स्यो गजगणिकानृगगीधव्याधतेंमैंघटकहाकस्यो विद्य
मानसमशूलसहतहैंकालकुलिसनडस्यो एतेकोटिकुटिल
करुणामयतिनतेंकहासस्यो नाजानौयहसूरमहाशठकौन
दोषविसस्यो॥७॥ रागसोरठ ॥ औरनजानैजनकी
पीर जबजबदीनदुखितभये तबतबकृपाकरीबलवीर ग
जबलहीनविलोकिचहुदिशतबसुखशरणपरो करुणासिं
धुदयालुदरशुदैसबसंतापहरो मागधमथेहनेनृपबंधनमृ
तकविप्रसुतदीनों गोपीगायगोपगोसुतलगिसातद्योसगि
रिलीनों श्रीनृसिंहवपुधारिअसुरहतिभगतवचनप्रतिपारो
सुमिरतनामद्रुपदतनयाकेंहंपटसमूहतनधारो मुनिमद
मेटिदास व्रतराख्योअंबरीषहितकारी लाखाग्रहवनबसत
सैन्यनेंपांडव विपतिनिवारीवरुणपासतेंनपतिप्रकटायेदा

वानलदुखटारो गृहअपनेंवसुदेवदेवकीकंसमहाखलुमा
रो सोइश्रीपतिगुणगणसुमिरनवसवेदविसदजसगावै अ
शरणसूरशरणजाचतहैकोऊसुरतिकरावै॥८॥ रागधना
श्री ॥ माधोगजग्राहतेंछुडायो निगमतिहूमनवचनअ
गोचरप्रकटस्वरूपदिखायो शिवविरञ्चिसुरपतिसवदेख
तवहुतदिननिदुखपायो विनुवदलेउपकारहूपनकोंकाहू
करतनआयो चितवतहीचितमेचिंतामणिचक्रलियेकर
धायो अतिकरूणाकातरकरुणानिधिगरूडोंजेहिविसरा
यो सुनियतयशगुणगणगजनकारणकवहूंगहरूनलायो
नानानियेसूरयहिऔसरकौनदोषविसरायो॥९॥ राग
धनाश्री ॥ जैसेतुमऔरवहुतखलतारे चरणप्रतापभज
नमहिमाकोंकोकहिसकैतुम्हारे दुखितगयंददुष्टमतिं
गणिकानृगहिकूपतेंउधारे विप्रवजायचल्योसुतकेहि
तकाटिमहाअघभारे गीधव्याधगौतमत्रियमृगकपिय
हिधौंकहव्रतधारे कंसकेसिकुवलयवलमुष्टिकसवसु
खधामसिधारे स्तनविषुवांटिलगायचलीहजवकीकवन
गतिपाई रजकप्रलम्बद्रोणदुःसासनभक्तभजनफलदा
ई नृपशिशुपालविषयरसविह्वलसरऔसरनहिजान्यों
अघवकवृषभतृणावर्तधेनुकगुणगहिदोषनमान्यों पां
डुवधुपटहीनसभामहंकोटि नवसनपुजाये विपतिका
लसुमिरनतेहिऔसरजहांतहांउठिधाये गोपिगायगो
सुतजलत्रासितगोवर्द्धनकरिधास्यो संततदीनहीनअ
पराधीकाहेसूरविसास्यो॥१०॥ रागधनाश्री ॥का
हूकेकुलनाहिविचारत अविगतिकीगतिकहींकौनसों
पतितसवनिकोतारत कौनजातिकोपांतिविदुरकीजिन
केप्रभुग्योहारत भोजनकरततुष्टिघरउनकेराजमान
मदटारत ओछेजनमकरमकेओछे ओछेहीवोलावत
अनतसहायसूरकेप्रभुकीभक्तहेतउनिआवत॥११॥
रागसारंग ॥ गोविंदप्रीतिसवनकीमानत जोजेहि
भायकरैजनसेवाअंतरगतकीजानत वेरचाखिकरुत

जिलेमीठेमिलडीदीनोंजाय जूठनकीकछुशंकनकीन्ही भक्तकियेसरभाय संततभक्तमीतहितकारीश्यामविदुरकेआये प्रेमविकलविदुरअर्पितप्रभुकदलीछिलटाखाए कौरवकाजचलेऋषिआपुनशाककेपत्रअघाये सूरदासकरूणानिधानप्रभुजुगजुगभक्तवढ़ाये ॥ १२ ॥ रागधनाश्री ॥ तेऊचाहतकृपातुम्हारी जिहिकेवसअनमिषअनेकगणअनुचरआज्ञाकारी प्रवहतपवनभ्रमतदिनकरदिनफणिपतिशिरनडुलावै दाहकगुणनजिसकतनपावकसिंधुनसलिलवढावै शिवविरंचिसुरपतिसमेतसवसेवतपदप्रभुजाने जोकछुकहतकरनसोइकीजतुकरियतुअतिअकुलाने तुमअनादिअविगतअनंतगुणपूरणपरमानंद सूरदासप्रभुसकलअसंजममघवाचरितनिकंद ॥ १३ ॥ तथा ॥ दयानिधितेरीगतिलखिनपरै धर्मअधर्मअधर्मधर्मकरिअकरनकरनकरै जयअरुविजयपापकहकीन्होब्राह्मणश्रापदिवायो असुरयोनिदीनीताऊपरधर्मउछेदकरायो पितावचनखंडेसोपापीसोप्रह्लादकीन्हो तिनकेहेतखम्भतेप्रकटेनरहरिरूपजुलीन्हो द्विजकुलपतितअजामिलविषईगणिकाप्रीतिवढ़ाई सुतहितनामनरायणलीन्होतिहितुवपदवीपाई यज्ञकरतवैरोचनकोसुतवेदविहितविधिकर्म तिहिहठिवांधिपतालहिदीनोंकौनकृपानिधिधर्म पतिव्रताजालंधरजुवतीप्रकटसत्यतेटारी अधमपुंश्चलीदुष्टग्रामकीसुवापढावततारी दानीधर्मभानसुतसुनियततुमतेंविमुखकहावै वेदविरूद्धसकलपांडवसुतसोतुम्हरेजियभावैं मुक्तिहेतजोगीवहुश्रमकरैंअसुरविरोधेपावैं अकथिककथिततुम्हारीमहिमासूरदासकहुंगावैं ॥ १४ ॥ रागकेदारा ॥ हैहरिनामकोआधार औरयहकलिकालनाहिनरह्योविधिव्योहार नारदादिशुकादिशंकरकियोयहैविचार सकलश्रुतिदधिमथतपायो इतनोयहघृतसार दसहुदिसिगुणकर्मरोंकौमीनकोज्योंजार सूरहरिके

भजनकरतेमिटिगयोभवभार ॥९५॥ रागदेवगंधार॥ मेरेजियऐसीआयबनी छांडिगोपालऔरेजोसुमिरौतौला जैजननी विष्णुकोमेरूकहालेकीजेअमृतएककनी मन क्रमवचनऔरनहिंचितवौंजवकवश्यामधनी कहाँलैक रौंकांचकोसंग्रहछाडिअमोलमनी सूरदासभगवंतभज नबिनुतजीजातअपनी॥९६॥ रागसारंग ॥ जिनजि नहींकेसंगउरगायो तिहितुमपेंगोविंदगुसाईसबनिश्र पनपौपायो अजामिलसुखमित्रहमारोसोमैंचलतबुझायो कहांकहालोकहोंछपनकीतिनहूंश्रवनसुनायो व्याधगी धगणिकाजिहिकागरहोतिहिचिठिनचढायो मरियतला जपांचपतितनमेंपूरसमोंविसरायो॥९७॥ रागसारंग चर्चरी ॥ नाथसारंगधरकृपाकरिदीनपरडरत अवत्रा सतेंराखिलीजै नाहिनजपनाहिनतपनाहिंनसुमिरनभज नशरणआएकीलाजकीजै जीवजलथलजितेभेषधर धरितिनेरचितदुर्गमअधमअटलभारी मुसलमुद्गरहनन त्रिविधकामेंगनतमोहिदंडदेनजमदूतभारी वृषभधेनुक मलखकेसिचांणूरमल्लपूतनारजकसेदुष्टतारे अजामिल गजगणिकातेंकर्मघटिकियेजु अवसूरचिततेंविसारे॥ ९८॥ रागधनाश्री ॥ जोजगऔरवियोहोंपाऊं तोय हविनतीवारवारकीहोंकततुमहिंसुनाऊं शिवविरंचि सुरअसुरनागमुनिसुतोनांचिजनश्रायो भूल्योभ्रम्योतृ षातुरमृगलोंकाहूश्रमनगंवायो अपथसकलचलिचा हिचहूंदिसिभ्रमउघरतमतिमंद थकितहोतरथचक्रही नज्योंनिरखिकरमगुणफंद पौरुषरहितअजितइंद्रिनवसज्योंगजपंक जपसो विषयासक्तनटीकोकपिज्योंजोइजोइकह्योसुकसो अपने हीअभिमानदोषतेरविहिउलूकनमानत अतिशयसुकृतरहितअघ व्याकुलवृथाश्रमितरजछानत सुनित्रैतापहरणकरुणामयसंत तदीनदयाल सूरकुटिलराखौशरणाईयहिव्याकुलकलिकाल ९९ रागधनाश्री ॥ कबहूंनाहिनगहरूकियो सदासुभावसु लभसुमिरनवसभक्तनिअभयदियो गायगोपगोपीजनका

रनेगिरिकरकमललियो अघअरिष्टकेशीकालीमथिदावाअ
नलपियो कंसवंसवधिजरासंधहतिगुरुसुतआनिदियो कर
षतसभाद्रुपदतनयाको अंबरआनिछियो सूरश्यामसर्वज्ञ
कृपानिधिकरुणामृदुलहियो काकेशरणजाउंजदुनंदनना
हिनऔरवियो ॥२०॥ रागधनाश्री ॥ हौंहरिसवपति
तनकोंनायक कोंकरिसकेवरावरिमेरी एतेमनकोलायक
जैतुमअजामिल सोंकीन्हीसोपातीलिखिपाऊं होयविश्वास
भलोजियअपनेऔरोंपतितवुलाऊं सिमिटिजहांतहतेसव
कोऊआयजुरेएकठौर अवकेइतनेआनिमिलाऊंवेरदूसरी
और होडाहोडीमनहुलासकरिकरैपापभरिपेट सवहिमिलै
करिपायनिपारोंयहेहमारीभेंट ऐसीकितिकवनाउप्राणपति
क्षुमिसवलायोआड़ो अवकीवेरनिवेरिलेहुप्रभुसूरपतित
कोटाड़ो ॥२१॥ रागदेवगंधार ॥ जोपैयहैविचारपरी
तोकतकलिकल्मषदूटनकोमेरियेंदेहधरी जौनाहिस्वसमा
नोकीजतुजगतमाहिकतकीनों कामक्रोधमदलोभमोह
केवांधिहाथकरिदीनो मनसाऔरमानसीसेवाकोंअगा
धकरिजानो होहुप्रगटकरुणामयकेशववहुअपराधनमा
नों काकोगृहदारासुतसंपतिजासोंकीजैहेतु सूरदासप्रभु
दिनदिनमरिवोजमकोलेखेदेतु ॥२२॥ रागकान्हरो ॥
तुम्हरीकृपागोविंदगुसांईहोंअपनेअज्ञाननजानत उप
जतदोषनाहिसुनिसमुझतरविकेहूतहिउलूकनमानत
सवसुखनिधिहरिनाममहामणिसोपायोनाहिनपहिचान
त परमकुवुद्धितुच्छरसलोभीकौडीलगिमगमगरजछान
त शिवकोधनसंतनकोसरवसुमहिमावेदपुराणवखानत
इतेमानइनसूरमहासठसोइनगवदलिविषयघरआनत॥
॥२३॥ रागकान्हरो ॥ जोपैतुमहीविरदविसारो तो
कहोकहांजायकरुणामयकृपनकर्मकोडारो दीनदयाल
पतितपावनजसुवेदवखानतचारो सुनियतकथापुरातनदि
सदिसव्याधअजामिलतारो रागद्वेषविधिअविधिअसुचि
सुचिजिहिंप्रभुजहांसम्हारो कियोनकवहूविलंवकृपानिधि

सादरशोचनिवारो इहिंलगुनामरूपगुणगणसवअज्ञआपु नतनधारो सूरदासस्वामीयहमनभ्रमुकरतकरतअवहारो ॥२४॥ रागकल्याण ॥ सवनिसनेहोछांड़िदियो हा यदुनाथजरातनग्रासोभ तिमोउनरिगयो सोइतिथिवार नक्षत्रलग्नसोइकरनजोगसोइठाढठयो अववेआंकफेरि नहिंवांचतगतस्वारथसमयो वरसद्योसमेहोतपुरानोफि रिफिरिसवकोउलिखतनयो डरोरहतनिर्मिलईशज्योंअ तियहिताप्रुतयो सोइधनधामुनामुसोकुलसोईसोईयह वपुजिहिंसवविढयो अवहींसवकोवदनस्वानलोंचितव तदूरिभयो हारासुतहितचितसज्जनसवकाहुनशोचिलयो संस्तदोषविचारिसूरधनिजेहरिशरणगयो ॥२५॥ रागकल्याण ॥ जैसेंहिराखौतैसेंहिरहों जानतहौंदुख सुखसवजनकौमुखकरिकहाकहों कवहुंकभोजनदेति कृपाकरिकवहुंकभूखसहों कवहुंकचढौतुरङ्गमहागज कवहुंकभारवहों कमलनयनघनश्याममनोहरअनुचर भयोरहों सूरदासप्रभुभक्तकृपानिधितुम्हरेचरणगहौं॥ ॥२६॥ रागकल्याण ॥ आजुहोंएककोदेकैटरिहों मो हिकहाडरपावतहोप्रभुअपनेपूरेपरलरिहों होंतौपतित सातपीरीकोजोजियऐसीधरिहों होतौफिरिवेसोइह्वैहौंतु महिंविरदविनुकरिहों अवतौतुमपरतीतिनसाईक्योंमन मानैहियरा सूरदाससांचीतवपपिहोंजोहंसिदेहौवीरा ॥ ॥२७॥ रागकल्याण ॥ मैअघसागरपैरिनलीन्हौं उ नपतितनकीदेखादेखीपाछेंशोचनकीन्हौं अजामिलगणि काहिआदिदैपैरिपारिगझोपैलो संगलगायवीचहीछांड्यो निपटहीनाथअकेलो मोदेखतसवहंसतपरसरतारीदैदै भीटि कीनीकथापाछिलनुकीसीगुरदिखायपुनिईरि भ वगंभीरनीरहीसूझतुक्योंकरिउतरोजात नहींअधारना मअवलंवनुतिनहितडुवकीखात तुमकृपालकरुणामय केशवअवहोंवूडतमाह कहत सूरचितवोकरिहौकैतुम दौरिपकरिहौवांह ॥२८॥ रागकल्याण ॥ तुम्हारेआ

गे होंनच्यो मुनियेंदी नदपालदेवमणिवहुवडरूपरच्यो कि
यो स्वांगजलहूथलहूमहंएकैतौनवच्यो शोधिसवैगुणगूढ
दिखायेअंतरहोजुसच्यौ रीझतनहींगोविंदगुसांईक्योंकछु
जायजच्यो इतनीतौकहौसूरपूरोदैकाहेमरतपच्यो॥२९॥
रागविलावल॥ अवकैंमाधवमोहिउधारि मगनहोतु
भवसिंधुमेंकृपासिंधुमुरारि नीरअतिगम्भीरमायामोहल
हरितरङ्ग लरेंजातअगाधकोंवगुगहेंग्राहअनङ्ग मीनइ
न्द्रीअतिहीकटतमोटअघसिरभार मोंयेनपाईजातजित
कितमोहअरुझसिवार क्रोधदम्भमयानतृष्णापवनअति
झकझोर नाहिचितवनदेतसुतत्रियनामनौकाओर परयो
वीचविहालविह्वलसुनहूकरुणामूल श्यामभुजगहिकाढ़ि
डारहुसूरवृंजजनकूल॥३०॥ रागधनाश्री॥ अवहौं
नाच्योवहुतगोपाल कामक्रोधकोपहरिचोलनाकंठविषय
कीमाल महामोहकेनूपुरवाजतनिंदाशब्दरसाल भ्रम
मोंयेंमनभयोपखावजउरपअसङ्गतचाल तृष्णानादक
रतिघटभीतरनानाविधिकेताल मायाकोकटिफेटावांध्यो
लोभतिलकदियोभाल कोटिककलाकाछिदिखराईजलथल
सुधिनहिकाल सूरदासकीसवैअविद्यादूरिकरहुनंदला
ल॥३१॥ रागसारंग॥ माधवमोहिकाहेकीलाज जन
मजनमह्वैरहोमैंऐसोअभिमानीवेकाज कोटिककर्मकिये
करुणामययादेहीकेसाज निशिवासरविषयारसरुचितेंक
वहुंनआयोवाज वहुतवारजलथलजगजायोभ्रमिआयो
दिनदेव औगुणकीकछुसकुचनशंकापरिआईयहटेव अ
वअनखायकहोघरअपनेराखोंवांधिविचारि सूरस्वानके
पारनहारेआवतहैदिनगारि॥३२॥ रागकेदारो॥
कृपाअवकीजियेवलिजाउं नाहिनमेरेअनतकहूंअवपदसंव
जविनुठाउं होंअसुचीअकृतीअपराधीसनमुखहोतलजा
ऊं तुमकृपालकरुणानिधिकेशवअधमउधारननाउं का
केद्वारजायहोंठाढ़ोदेखतकाहिसुहाउं अशरणशरणनि
रद्व्यापकतुवहोंकुटिलकामसुभाउं कलुषीपरममलीनदुष्ट

होसेतेउतौनविकाउं सूरपतितपावनपदअम्बुजपारसको रसाउं ॥३३॥ रागकान्हरो ॥ ऐसीकबहरिहोगोपालम नसानाथमनोरथदाताहोप्रभुदीनदयाल चितचरण ननिर न्तरअनुरतरसनाचरितरसाल लोचनसजलप्रेमपुलकित तनकरकंजलिदलमाल ऐसीरहतलिखतछिनछिनुजम अपनौमायोभाल सूरसुजसरागीनडरतमनसुनिजातनाक राल ॥३४॥ रागकेदारो ॥ धोरेजीवनभयोतनभारो। कियोनसंतसमागमकबहूंलयोननामतुम्हारो अतिउनम तनिरंकुसमैगलनिसिदिनरह्योअसोच कामक्रोधमदलो भमोहवसरहूंसदनअपशोच महामोहअज्ञानतिमिरमें मगनभयोसुखजानि तैलकदषयोभ्रम्योभ्रमहिभ्रमभ ज्योंनसारंगपानि गीध्योदिठहेमतस्करज्योंअतिआतुरमति मंद लुवध्योस्वादुमीनअमिषज्योंअवलोंक्योनहिफंदज्वा लाप्रीतिप्रकटसनमुखहैहठिपतंगवपुजारो विषयासक्त अमितअघव्याकुलसोहमकछुनसम्हारो ज्योंकपिशीत हुताशनगुंजासिमिटिहोतलैलीन त्योंसठदयातजेनहिं अंगहठरह्योविषयआधीन सेंवरफलसुरंगशुकनिरख तमुदितभयोखगभूप परसतचोंचुतूलउड़तमुखतन छादितपशुकूप औरकहांलगिकहोंकृपानिधियातनके कृतकाज सूरपतिततुमपतितउधारनगहौविरदकी लाज ॥३५॥ रागधनाश्री ॥ प्रभुमेरे——औगुण नविचारो धरिजियलाजशरणआयेकीरविसुतत्रासनि वारो जोगिरिपतिमसिघोरिउदधिमेंलैसुरतरूनिजहा थ ममकृतदोषलिखैवसुधाभरितऊनहींमितिनाथ क पटीकुटिलकुचालकुदर्शनअपराधीमतिहीन नाहिन औरकियोकोउऐसोजाहिभजोहोदीन जोगयज्ञतपत्र तनहिकीनोवेदविमलनहिभाख्यो अतिरसलुब्धस्वान जूठनिज्योंअनतनहींमनराख्यो जिहिंजिहिंजोनिफिरों संकटमेतिहितिहिइहैकमायो कामक्रोधमदलोभग्र सितहैविषयपरमवि लायो तुमअनंतअनादिपरिपू

रणअघमोचनसुखरासि भजनप्रतापनाहिनेजान्योंवंध्योका
लकीफाँसि तुमकृतज्ञसवहीविधिसमरथअशरणशरणमु
रारी कृपानिधानसूरवूड़तहैलीजैभुजापसारि॥३६॥ रा
गधनाश्री॥ विनतीजनकासोंकरैगुसांई तुमविनुदी
षदयालुदेवमणिसवकीकीठकुराई अपनेसेकरचरणनै
नमुखअपनीसीवुधिवांई कालकरमवसफिरतसकलप्र
भुतेहमरीसीनाई पराधीनपरवदननिहारतमानतमोह
वडाई हंसेहंसैविलखैदुखविनुदुखज्योंजलदर्पनझाई।
लियोदियोचाहैतौकोउप्रभुसुनिसमरथजदुराई देवसकल
व्यापारपरस्परज्योंपशुदूवचराई तुमविनुऔरकोऊनकृ
पानिधिपावैपीरपराई सूरदासकेत्रासहरनकोकृष्णनाथ
प्रभुताई॥३७॥ रागनट॥ हैंप्रभुमोहूतेअतिपापी
घातककुटिलचवाईकपटीमोहक्रोधसंतापी लंपटधूत
पूतदमरीकौविषमजापनितजापी कामविवसकामिनि
हीकेरसहठकरिमनसाथापी भक्षअभक्षअपेपीवनको
लोभलालसाधापी मनक्रमवचनदुसहसवहिनसोंकटु
कवचनआलापी जेतेअधमउधारेप्रभुतुममैंतिहिकीग
तिमापी सागरसूरविकारजलभरोवधिकअजामिलवापी
॥३८॥ रागनट॥ वहुरिकीकृपाकहाकृपालविद्यमा
नजनदुखितजगतमेतुमप्रभुदीनदयाल जीवतयाचत
कननिरधनकरदरदररटतविहाल तनछूटेतेधर्मनहीं
कछुजौदीजैमणिलाल कहदाताजूदैवेनहिदरसनदेखि
दुखितकलिकाल सूरश्यामकोकहानिहोरोचलतवेदकी
चाल॥३९॥ रागनट॥ मेरेहृदैनाहिनआवतिहोगो
पालहोंइतनीजानत कपटीकृपनकुचीलकुदर्शनदिनउ
ठिविषयवासनावानत कदलीकंटकसाधुअसाधुहिकेह
रिकेसंगधेनुवखाने यहविपरीतिजानितुमजनकीअंतरदै
विचरहौलुकाने जोराजासुतहोइभिखारीलाजपरेतेजाय
विकाने सूरदासप्रभुअपनेजनकोकृपाकरहुजोलेहुनिदा
ने॥४०॥ रागनट॥ कहावतऐसेत्यागीदानि चारिपदा

रथदएसुदामहिअरूगुरूकोसुतआनि रावणकेरसमस्त
कछेदेकरगहिसारंगपानि वीभीषणकोलंकादीनीपूरव
लीपहिचानि मित्रसुदामाकियोअनाचकभीतिपुरातनजा
नि सूरदाससोंकहानिठुरईनैननिहूंकीहानि ॥ ४१ ॥
रागधनाश्री॥ नाथजूअबकेमोहिउवारो पतितनमें
विख्यातपतितहोंपावननामतुम्हारो वडेपतितनाहिनआ
सगहूं अजामेलकोहोंजुविचारो भाजैनरकनाउंमेरोसु
निजमनिदियोहठतारो छुद्रपतिततुमतारेरमापतिअव
नकरोजियगारो सूरदाससांचोतवमानेजोहोयममनिस्ता
रो॥४२॥ रागधनाश्री ॥ वादिहिजनमगयोसिराय
नाहरिभजननगुरूकीसेवामधुवनवस्योनजाय श्रीभा
ग वतश्रवननहिकीन्हौंकवहूंरुचिउपजाय सादरहैहरि
केभक्तनिकेकवहुंनधोएपाय रिझएनहिकवहूंगिरिवर
धरविमलविमलजसगायप्रेमेमसहितपगवांधिघूंघरूस
क्योनअंगनचाय अवकीवारमनुष्यदेहधरिकियोनकछु
उपाय भवसागरपदअंवुजनौकासूरेंलेहुचढाय॥४३॥
रागसारंग॥ छांडिमनहरिविमुखनकोसंग कहाभ
योपयपानकरायेंविषनहितजतभुवंग जाकेसंगकुवुद्धि
उपजेपरतभजनमेंभंग कामक्रोधमदलोभमोहमेंनिसि
दिनरहतउमंग कागहिकहाकपूरखवायेंश्वानन्हवायेगं
ग खरकोकहाअरगजालेपनमर्कटभूषनअंग पाहनप
तितवाननहिभेदतरीतोकरतनिषंग सूरदासखलकारी
कामरिचढतनदूजोरंग॥४४॥ रागविलावल ॥ ते
रोतवतिहिंदिनकेहितूहरिविनसुधिकरिकृपणतिहिचि
तुआनि जवअतिदुखसहिकठिनकामगहिराख्योहोज
ठरलसोनितसानि जहानकाहूकोगमदुःसहदारुणातन
सकलविधिविषमखलखानि समुझिधोंजियमाहिकोन
सकतनहिवुधिवलकुलतिहिंजायोकाकीजानि देसीआ
पदातेंराख्योतौथ्योपोष्योजियदयोमुखनासिकानयनपद
पानि सुनिकृतघ्र निशिदिनकोसखाआपुअवजोविसारो

करीवैपहिचानि अजहुंसंगरहतुप्रथमलाजगहतुसंततशु
भचाहतुप्रियजनजानि सूरसुहृदमणिईश्वरअंतरजामी
सुनिसठसठझूठोहठकपटनठानि ॥४५॥ रागनट ॥जौ
लौंसत्यस्वरूपनसूझततौलौंमनुमणिकंठविसारेफिरतुस
कलवनबूझत अपनोहीमुखमलिनमंदमतिदेखतदरप
नमाहं ताकालिमामेटिवेकारनपचतपखारतछांह तेल
तूलपावकपुटधरिधरिवनहिनविनाप्रकासत कहतवना
यदीपकीवातेंकैसेहोंतमनासत सूरदासजवयहमतिआ
ईवेदिनगयेअलेखे. कहजानेदिनकरकीमहिमाअंधनय
नविनुदेखे ॥४६॥ रागकेदारो ॥ दिनदसलेहुगोविंद
गाय मोहमायालोभलागोकालघेरेआय नीरमेंजसउठ
तवुदवुददेखतेविरलाय दिखतकोक्षितिजन्मझूठोकाक
श्वाननखाय कर्मकागदवांचिदेखोजोनमनपतिआयअ
खिललोकहिभटकिआयोलिख्योमेटिनजाय स्फुरतिकेद
सद्वाररूंधेवृद्धहिजराआय सूरहरिकोभजनकीजैजनम
पातकजाय ॥४७॥ रागधनाश्री ॥ रेमनरामनामसु
मिरनविनुजनमवादिखोयो रञ्चएककेसुखकारनअंतका
लविगोयो साधुसंगभगतिविनातनुअकारथजाय जुआ
रीज्योंहाथझारिज्योंचलेछिटकाय सुतदारादेहगेहसंप
तिसुखदाई इनमेंकछुनाहितेरोकालअवधिआई काम
क्रोधमोहलोभतृष्णामनमोह्यो गोविंदगुणचितविसारि
कौननींदसोयो सूरकहैसचुविचारिभ्रमभूल्योअंध राम
नामनिजकरनीऔरसकलवंध ॥४८॥ रागकेदारो॥
रेमनगोपालसोंकरिहेतु नामकीदृढवारिकरिलैउवरेते
रोखेतु मनसुवातनपींजरेवंध्योरहतनिकेतु कालफि
रतविड़ालतनुधरिअवधरेंतोहिलेतु विषविदारणसेयह
रिकोउतरेसायरसेतु सूरभजिगोविंदकोयोंगुरुवतायेदे
तु ॥४९॥ रागसारंग ॥ भजनविनुजीवतहैजैसेप्रेत
मलिनमंदमतिडोलतघरघरउदरभरनकेहेत मुखकटुव
चनवकतनितनिंदासुजनसुखेदुखदेत कवहुंपापकैपाव

तपैसागाड़िधूरितहंदेन गुरुब्राह्मणअच्युतजनसज्जनजात
नकवहुंनिकेत सेवानहींगोविंदचरणकीभवननीलकोखेत
कथ्यानहींगुणगीतसुजसहरिसाधनदेवअनेत रसनासूरवि
गारैकहांलौवूडतकुटुंवसमेत॥५०॥ रागसारंग॥ तवि
तेंगोविंदक्योंनसंभारे भूमिपरेतेंशोचनलाग्योमहाकठिन
दुखभारे अपनेपिंडपोखिवेकारनकोटिसहस्रजियमारे उ
नपापनितेंक्योंउवरेगोलोहथम्भअंकनारे अपनेलोभलाल
चिकेकारनकाहुपापतेमहारे सूरदासजमकंठगहेतेंनिक
सतप्राणदुखारे॥५१॥ रागसारंग॥ इनराजसगुण
कौनविगोयो हिरण्यकश्यपहिरण्याक्षआदिदैरावणकुंभ
करणकुलखोयो कंस केसिचांणूरमहावलकरमरजीज
मुनाजलवोयो जरासमैंशिशुपालसुयोधाआनआसलै
जौतिसमोयो ब्रह्मामहादेवसुरसुरपतिअतिनाचतफिर
तमहारसभोयो सूरदासजेचरणशरणरहेतेजननिकट
नींदभरिसोयो॥५२॥ रागसारंग॥ हरिकेजनसवतें
अधिकारी ब्रह्मामहादेवतेंकोवडताकीसेवाकछुनसुधा
री जाचकपैंजाचककहजाचैजोजाचैतौरसनाहारी गणि
कापूतशोभानहिपावतजिनकेकुलमेंकोऊपितारी तिन
कीसाखिदेखहुहिरण्याक्षसरावणकुटुंवसहितभएखारी
जनप्रह्लादप्रतिज्ञापारी वीभीषणआहुकराजारी शिला
तरीजलमांझशेतुवंधवलिवहचरणअहिल्यातारी जेर
घुनाथशरणतकिआएतिनकीसकलआपदाटारी जिहिं
गोविंदअचलध्रुवराख्योग्रहरहनावर्त्तिदेतविशारी सूरदा
समगवंतभजनविनुधरतीजननिवोझकतमारी॥५३॥
रागविलावल॥ मनरेंकरूमाधोसोंप्रीति कामक्रोध
मदलोभमोहतूछांडिसवैविपरीति ध्रुवभौंरासोगीवनभ्र
मेरेंमोहुनमानेगापु सवसुमननिनीरसुकरैरेकमलवंधा
वैआपु सुनिपरमितिपियप्रेमकीरेचात्रिकचितवैवारि घ
नआसासवदुखसहैपैअनतनजांचैवारि देखहुकरनीक
मलकीरेकीन्हींरविसोंहेत प्राणतजेप्रेमन तज्योरेसूख्यो

सरहिसमेन दीपकुपीरनजा-नहीरेपावकुपरेपतंग तन
तोतिहिंज्वालाजस्यौरेचितनभयोरसभंग मीनवियोगनस
हिसकैरेनीरनपूछैवान देखितूताकीगतिहिरेरतिनघटीत
नजात परनिपरेवाप्रेमकीरेचित्रुलैचढतअकाश तहांच
ढिताहिज्ञदेखहीरेमोपरितजतउसाश सुमिरिसनेहकुरं
गकोरेश्रवणनिराच्यौरागु धरनिसक्योपगुपछुमनारेस
रसनमुखउरलागु देखिजरनिजडनारिकीरेजरतिप्रेतके
संग चितानचितफीकौभयौसुराचीपियकेरंग लोकवेद
वरजैसवैरेनयननिदेख्यौत्रासु चोरनजियचोरीतजैरेवरू
सवसहैनिवासु सवरसकोरसुप्रेमहैरेविषईखेलैसारि त
नमनधनजोवनखस्योरेतउनहिमानीहारि तैत्रुरतनपा
योभलोरेजान्योंसाधुनसाजु प्रेमकथाअनुदिनसुनीरेतऊ
नऊपजीलांज्ञ सदासंघातीअपनोअरूजियकोजीव नप्रान
सुतौविसाख्योसहजहीरेहरईश्वरभगवान वेदपुराणनि
सुनिसवैरेसुरनरूसेवैजाहि महामोहअज्ञानमेरेक्योंनस
म्हारे ताहि खगमृगमीनपतंगलोंरेमैंसोधेसवठौर जल
थलजीवजितेकितेरेकहूंकहांलगिऔर प्रभुपुराणपाव
नसखारेप्राणनहीकेनाथ परमदयालकृपालकृपानिधि
जीवनजिहिकेनाथ गर्भवासअतित्रासमेरेजहांनएकोअं
ग सुनिसठतेरेप्राणपतिरेतहंउनछांड्यौसंग दिनराखत
पोषतरहेरेजैसेंचोलीपान वादुखतेंतोहिकाढिकेरेगहि
दीनोंपयपान जिहिंजडतेंचेतनकियोरेरचिगुणतत्वविधा
न चरणचिकुरकरनखदियेरेनयननासिकाकान असन
वसनवहुविधिदएरेऔसरऔसरआनि मातपिताभैया
मिलैरेनइरूचिनइपहिचानि सजनकुंटुवपरिकरवढ्यौ
रेसुतदाराधनधामु महामोहविषईभयोरेचितआकरख्यो
कामु खानपानपरिधाममैरेजोवनगयोसववीति ज्योंवि
टपरत्रियसंगवस्योरेभोरभएभयोभीति जैसेंसुखहीधन
वस्योरेतैसेंतनहिअनंग धूमवढ्यौलोचनखसेरेसरवान
सूझौसंग जसजान्योंसवजगसुन्योंरेवढ्योंअजसुअपार

वीचनकाहूतवकियोजवदूतनदीन्हीमार कोजानेकैवारम
लौरेऐसेकुमतिकुमीच हरिसोंहेतुविसारिकैरेसुखचाहत
हैनीच जोपैजियलज्जानहीरेकहाकहौसौवार एकहिअं
कुनहरिभज्योरेसुनिसठसूरगंवार ॥५४॥ रागधनाश्री
॥ जनमसिरानेअटकेअटके सुतसंपतिगृहराजमानको
फिरोअनतहीभटके कठिनजवनिकारचीमोहकीनोरीनो
नजायचटके नाहरिभजननत्नपतिविषयकरिरह्यौवीच
हीलटके सवजंजालसुइंद्रजालसमज्योंबाजीगरनटकेसू
रदासशोभानशोभियतपियवहूनधनमटके ॥५५॥ राग
धनाश्री ॥ यहसवमेरीयेकुमति अपनेहीअभिमानदो
षदुखपावतुअति जैसेंकेहरिउझकिकूपजलदेखिनिजु
प्रति कू १परोमदमरमनजान्योंभईहैसुगति ज्योंगजसे
लफटिकमेंदेख्यौदसननिहति जोतूसूरसुखहिचाहतहैतो
करिविषैविरति ॥५६॥ रागधनाश्री ॥ होंमहापति
तअरुदूजेअभिमानी परमारथसोंविरतिविषैरतिभावभ
गतिमैंकवहुंनजानी निसिदिनदुखदमनोरथकरिकरिधा
वतहूतष्णानबुझानी शिरपरकालनीचनहिचितवतआ
युघटतअंजुरीकोपानी विमुखनिसोंरतिजोरिसाधुनिसों
मानोंनहुतीकवहुंपहिचानी तिनविनुप्राणरहतनिशिवा
सरजिहिंसवदिनरसरीतिवखानी मायामोहलोभकेलीने
जानिनहंदावनरजधानी नवलकिशोरजलदतनसुंदरविसरे
सूरसकलसुखदानी ॥५७॥ रागकल्याण इतनेदिनहरिसुमिर
नविनखोए परनिंदारसनाकेरसमेंअपनेकरतलवोए वि
विधरुचिरअंगअंगदैमर्दनवसनवनाएधोए तिलकचट
कदैचलेस्वामिह्वैविषइनकेमुखजोए सवजगकंपितका
लव्यालडरसुरब्रह्मादिकरोए सूरदासअधमनकीकोग
तिउदरभरेभरिसोए ॥५८॥ रागविलावल ॥ हरि
केजनकीअतिठकुराई महाराजऋषिसुरनरवरसुनिदे
खतरहतलजाई निर्भयदेशराजताहीकोलोगनमनउत्सा
ह काम क्रोधमदलोभमोहमिलिभयेचोरतेंसाह दृढविश्वा

सकिये सिंहासनतापरवैठेभूप जससोंविमलछत्रसिरसो
भितराजतपरमअनूप हरिपदपंकजप्रियाप्रेमरसताहीके
रंगरातो मंत्रीज्ञाननऔसरपावनकहतनवातसकातो अ
र्थधर्महोउरहेदूरिदूरिकाममोक्षसिरनायो विनयविवेकवि
चित्रपौरियासमैनकोहूपायो अष्टमहासिद्धिआगेठाढीक
रजोरेडरलीन्ही छरीदारवैरागविनोदीझोरिकैवाहरिकीन्ही
मायाकालकछूनहिंव्यापैयारसरीतिजुजानें सूरदासनर
तनतोपायोगुरुप्रसादपहिचानें ॥५९॥ रागसारंग॥
अपनीभक्तिदैभगवान कोटिजोंलालचदिखावैनाहिनेरुचि
आन महाप्रचलुमरनकौकछुसोचनाहींमोहि कियेप्रणहों
रहतुह्वारेआजुतेंघरुतोहि जादिनतेंयहजनमुपायोयहैया
कीरीति विषैविषहठिखातटरतनकरतकछूअनीति य
याकिन्नरयूथकिंकरतऊँटरीनटेक कोपिगयोजमपुरीत
हांउपलोधारअनेक नाहिनकाचोप्रभुनिकृपानिधिकहतक
हारिसाथ सूरप्रभुयहतुम्हेंनिहोरोडारिहोंकतुराय॥६०॥
रागधनाश्री॥ माधवतोहूसकुचशरणआवेकीहोतजु
निपटनिकाज यद्यपिवालविहुनवैभवसोंसोऊकरतकृपा
तोलाज तनजुतसलिलवहतुवरपोथजुपकरतसोउनरजा
म नदिकवृक्षमूलआश्रितहितनऊआपुअकुलात तुमप्र
भुअजितअनाथलोकपतिहोंअजानमतिहीन कछुअन
होतनिकटउतलागतमगनहोतउतदीन परिहसप्रवलशू
लनिशिवासरतातेयहकहिआई सूरदासकृपालशरणाग
तभयेसुकौनजिहिरनिपाई ॥६१॥ रागसोरठ॥ प
तितपावनदीनदयालअनाथकेनाथ संततसवलोकनिश्रु
तिगावतयहगाथ मोतेंनकोउपतितनकोअनाथकोंदीन
काहेनमोहितारियेजनकवनअंगुहीन द्विजगणिकागति
दायकगजमोचनऋषिश्राप अर्जुनसंतापत्राणहरणअत्रि
ताप मनसावाचाकर्मनाकछुकहतनाहिनराखि सूरस
कलअंतरकेतुमहौसाखि॥६२॥ रागविलावल॥
जनमजनमजवजवजिहिजिहिजगजहांजहांजनजाय तहांत

ह्यांतवचरणकमलरतिजोवैसुदृढरहाय श्रवणसुजससा
रंगनादविधिचातकविधिसुखनाम नयनचकोरसंतसंतत
शशिकरअर्चनअभिराम सुमतिस्वरूपसंचतुसरधावि
धिउरअंवुजअनुराग तिनप्रतिधनिअलिगुंजमनोहरआ
वतप्रेमपराग औरैसकलसुकृतश्रीपतिहितप्रतिफलरह
तसुप्रीति नीतिनईसुखदुखसूरजप्रभुहीजैमजनप्रतीति
॥६३॥ रागसारंग॥ तुम्हरीभक्तिहमारेप्रान छूटिग
येकैसेंजनजीवहिज्योंपानीविनुप्रान जैसेंगगननादसुनि
सारंगवधेवधिकविनुवान ज्योंचितवेशशिओरचकोरहि
देखतहीसचुमान ज्योंपतंगदीपकसोंलोभ्योंपानीमीनसु
ठान सूरदासप्रभुहरिगुणमीठेनितप्रतिसुनियतकान॥
॥६४॥ रागसारंग॥ यहैकरतअनेकजनमगयेम
नसंतोषरखायो सुनिदिनहानिदुरासालाग्योसवैलोकफि
रिआयो सुनिसुनिस्वर्गरसातलसीतलतहाँतहाँउठिधा
यो कामक्रोधमदमोहअगनितेंकाहूनतनकवुभायो स्व
कचंदनवनिताविनोदसुखयहदवजडनिवुतायो मैंअजा
नअकुलायअधिकलैजरतमांझघृतनायो भ्रमिभ्रमिअ
वहारोहियरायेदेखिअनलजगछायो तुम्हरिकृपाविनु
सूरश्यामप्रभुकाहूश्रमननसायो॥६५॥ रागधनाश्री
॥ तातेंजानिमजेवनवारी शरणआयेकीतापनिवारी ज
नप्रह्लादप्रतिज्ञापारी हिरणकशिपुकीदेहविदारी ध्रुव
निर्भयपददियोमुरारी अम्वरीषकीगर्भगतिटारी द्रुपदसु
ताजवप्रकटपुकारी गहतचीरहरिनामउवारी गजगणि
कागौतमप्रियनारी सूरदासशठशरणतुम्हारी॥ ६६ ॥
रागधनाश्री॥ भक्तिविनाजोकृपानकरतेतौहोंआ
सनकरतो वहुतपतितउद्धारकियेतुमहोंताकोअनुसरतो
मुखमृदुवचनजानमतिजानहुशुद्धपंथपगुधरतो सुजन
वेषरचनाप्रतिजन्मनिआयोपरधनहरतो कर्मवासनाक
वहूंछांडीशापपापआचरतो धर्मध्वजाअंतरकछुनाहीं
लोकदिखावतफिरतो परत्रियरतिअभिलाषनिशादिनम

नपिठरीलैभरतो दुर्मतिअतिअभिमानसानविनुसवसाधनतेंट
तो उदरअखातविवरपूरनहितमित्रवंधुहोंलरतो रसना
स्वादसिथिललंपटहैअघटितभोजननिरतो यहज्योहारलि
खायप्रातदिनपुनिजीयोपुनिमरतो रविसुतदूतवारिनहिं
सकतेकपटमनोउरवरतो साधुशीलसद्रूपपुरुषकोंअपर
सवहुउच्चरतो औघडअसतकुचीलनसोमिलिमायाजलमें
नरतो कवहुंकराजमानमदपूरणकालहुतेनहिडरतो मि
थ्यावादआपजशसुनिसुनिमूछहिपकरिविगरतो यहि
विधिउच्चअवचतनधरिधरिदेशहिदेशविचरतो तहांसु
खमानिविसारिनाथपदअपनेरंगविहरतो अवमोहिराखि
लेहुमनमोहनअधमअंगपदपरतो खरकूकरकीनाइ
मानिसुखविषयअगनिमेंजरतो तुमगुणकीजेसेंमतिना
हिनहोंअघकोटिविचरतो तुम्हेंहमैंप्रतिवादभएतेंगौर
वताकोंगिरतो मोतेंकछूनउवरीहरिजूआयोचढतउतर
तो अजहूंपतितसूरपदतजतोजोऔरहुनिस्तरतो॥६७॥
रागधनाश्री॥ अद्भुतजशविस्तारकरनकोहमजनको
वहुहेत भक्तपावनकोउकहतनकवहूंपतितपावनकहि
लेत जयवीजयकीकथानकछुवेदसमुखवधविस्तार य
द्यपिजगतजननकोंकर्त्तासुनिसवउतरतपार शेषनागके
ऊपरपौढततेतिकनाहिवडाई यातुधानिकुचगिरिमरक
ततनवतहांपूर्णतापाई धर्मकहेसरशयनगंगसुततेतुकना
हिसंतोष सुतसुमिरतआतुरद्विजउधरतनाममयोनिर्दो
ष धर्मकर्मअधिकारिनसोंनहितुम्हरेनाकछुकाज भूभर
हरणप्रकटतुमभूतलगावतसंतसमाज भारहरणविरदा
वलितुम्हारीमेरेक्योंनउतारी सूरदाससतकारकियेतेना
कछुघटेतुम्हारी॥६८॥ रागधनाश्री॥ हरिजूहोंयो
तेदुखपात्रश्रीगिरिधरणचरणरतिनभईतजिनविषैरस
मात्र हुतोआक्रूतवकियोअसद्व्ययकरीनव्रजवनयात्र
पोषेनहीतुवदासप्रेमसोपोष्योअपनोगात्र भवनसवारिना
रिरसलोभ्योसुतवाहनजनभ्रात्र महानुभावपदनिकटनप

रसेजान्योनकृतविधात्र छलवलकरि जिततितहरिपरध
नधायोसवदिनरात्र शुद्धाशुद्धवहुवोझवह्योसिरक्षषिजो
कसोलैरात्र हरैकुचीलकामभूतष्णाजलकलिमलदैपात्र
ऐसेकुमतिजाटसूरजकोप्रभुविनकोनउधात्र॥६९॥ रा
गधनाश्री महापतितपावनजानिशरणआयो उद
धिसंसारप्रभुमनामनौकातरनअटलअस्थाननिजनिगम
गायो व्याधअरुगीधगणिकाअजामिलद्विजहिचरणगौ
तमनारिपरसिपायो अंतऔसरअर्द्धनामउच्चारकरिसु
मिरतहिगजग्राहतेछुडायो अवलप्रहलादवलिदैतसुख
हीनचितदासध्रुवतवचरणशीसनायो पांडुसुतविपतिमो
चकमहादासकेद्रोपदीचीरनानाउढायो भक्तवत्सलकृ
पानाथअशरणशरणभारभूतलहरणजनसुहाये सूर
प्रभुचरणचितचेतचिंतनकरतब्रह्मशिवशुकशनकसंग
धायो॥७०॥ रागधनाश्री॥ प्रभुहोंसवपतितनको
टीको औरपतितसवद्योसचारिकेहोतोपतितजन्महीको
वधिकअजामिलगणिकातारीऔरपूतनाहीको मोहिछा
डितुमऔरउधारेमिटेसूलकैसेजीको कोउंनसमरथसे
धकरनकोखैचिकहतहोंलीको मरियतलाजिसूरपतित
नमेंकहतसवनिमेंनीको॥७१॥ रागरामकली ॥अ
नाथकेनाथप्रभुकृष्णस्वामी श्रीनाथसारंगधरकृपाक
रिमोहिसकलअघहरणहरिगरूडगामी परोभवजल
घिमेंधरिहाथकाढिममदोषजिनिधरोचितकामकामी
सूरविनतीकरेसुनहुनंदनंदतुमकहाकहोखोलिकेअंत
र्यामी॥७२॥ रागधनाश्री॥ ऐसेप्रभुअनाथकेस्वामी
कहियतदीनदासपरपीरकसवघटअंतरजामी करतवि
वस्त्रद्रुपदतनयाकोशरणशब्दकहिआयो पूर्णअनंतको
टिपरिवसननिअरिकोगरवगंवायो सुतहितविप्रकीरहि
तगणिकापरस्वारथप्रभुपायो छनचिंतनवनशापसंक
टतेगजग्राहतेछुड़ायो तवतनवदनदेखिअेविगतकोज
नलगिवेषवनायो जेजनदुखीजानिभएतेरिपुहतिहृतिसु

खउपजायो तुह्मरिकृपाजदुनाथगुंसाईं किहिकिहिभ्रम नगंवायो सूरदासअंधअपराधीसोकाहेविसरायो॥७३॥ ॥ रागधनाश्री॥ दीनजनक्योंकरिआवैशरण भूल्यो फिरतसकलजलथलमगसुनिश्रेतापहरण ममअनाथ अविवेकनयनविनुसुकृतशब्दसुनिधावै पदपदपरतक मैतमकूपहिकोकरिकृपावचावै नहिकरलकुटिसुमति सतसंगतिकिहिअधारअनुसरई प्रवलअपारमोहनिधि दशदिशिसुधोकहाअवकरई अघटितरटतसमीसुमृत खनिनिगमऐननहिपावै सूरश्यामपदनखप्रकासविनुक्यों करितिमिरनशावै॥७४॥ रागविलावल॥ तुह्मरोना मतजिप्रभुजगदीससुनोकहोमेरेऔरकहावलु वुधिविवे कअनुमानआपुनेसुधोकरहुसवसुकृतनिकोफलु वेदपुरा णसुमृतिसंतनकीयहआधारमीनकोज्योंजलु अष्टसिद्धि नवनिद्धसूरकेसंपतिविनुसुखककूकहालल॥७५॥ रागधनाश्री॥ मेरोमनमतिहीनगुंसाईं सवसुखनिधिप दकमलविसारेश्रमतस्वानकीनाईं वृथाभ्रमितभाजनअ वलेहतसूनेसदनमसान यहिलाल चअटक्योंकैसेहूतप तिनमानतमान जहंजहंजाततहांतहंत्रासतकरतमिलत पदत्रान कौनकाजकारनकुवुद्धिसठमढ़कतएतेमान पर मदयालविश्वपालकप्रभुसकलहृदैनिजनाथ ताहिछांड़ि पहसूरमहाजड़भ्रमतभ्रमितकेसाथ॥७६॥ रागधनाश्री॥ मोसोंपतितनऔरहरे जानतहोप्रभुअंतरजामी जोमैंकामकरे ऐसोअंधअधमअविवेकीखोटनिकरतख रे विषईभजेविरक्तनसेयेमनधनधामधरे ज्योंमाषीमृगमद मंडिततनपरहरिपूज्यपरे त्योंत्योंमूढ़विषैगुंजागहिचिंता मणिविसरे कुंवरिकलोपाषंडकामवसभूपभवननिसरे ए कैदहैजानिअवलंवनवैसेहिपतिततरे हारेत्रासकरतजम किंकरसुनिममनामडरे सूरपतिततुमपतितउधारनविर दकीलाजवरे॥७७॥ रागकान्हरो॥ ठाकुरमलेवुरेतै तेरेहमरेकुलकीलाजवड़ाईविनतीसुनौप्रभुमेरेआनंदे

सबरंकभिखारीमैंसबछाँडेउ होतअनेरे सबतजितुमशर णागतआयोंदृढकरिचरणगहेरे तबप्रसादहमबदतनका हूनिडरभएघरघेरे सूरदासप्रभुतुमरिकृपातेंपायेसुख जुघनेरे ॥७८॥ रागधनाश्री ॥ तुमकबमोसोपति तउधारो काहेकोंहरिबिरदबुलावतबिनुमसकतिकोता रो व्याधगीधपूतनाजोतारीतिनकोकहानिहोरो गणि कातरीआपनीकरनीनामभयोप्रभुतेरो अजामेलद्विजज नमजनमकोहुतोपुरातनदास नेकचूकतेंयहगतिकीनीपु निबैकुंठहिवास भक्तजानिकेसबजनतारेतोकोंजाएखूट तबजानिहोंजुमोहितारिहोसूरकूरकबिटूट॥७९॥ राग धनाश्री ॥ मैंतोअपनीकहीबडाई अपनेकृततेंहोंनहि विरमतुसुनिकृपालब्रजराई जीवनतजेस्वभावजीवकोलो कबिदितदृढताई नोक्योंतजेनाथअपनोंपनुमहप्रभुकीप्र भुताई पांचलोकमिलिकह्योतुमारोनहिअंतरसुखताई। तबसुमिरनछलदुर्मरकेहितमालातिलकुबनाई कांपउला गीधरापापतेंताडिनिदेषजुडाई आपुनभएउधारनजग कोमैंसुधिनीकेपाई अबमिथ्यातबजापत्तानसबप्रकटभ ईठकुराई सूरदासउद्धारसहजगतिचिंतासकलगंवाई॥ ८०॥ रागनट॥ जाकेहरिजूकोबरूताकेधौंकौनकोड रू काहेजियमेसोचकीजैकोहैहोऐसोअवरू सबहिनके नाथजीवनयाहीकेहाथवेअजरअमरअजितअकाय सो ईबसतसाथशरणसदाअनाथवदतवेदविदुषदेखोधोंगा वतगाथ सुनोंधोंजिनकीभांतिसकलचलतनीतिअपने चितचकितरहत रबिनतपतअतिवायुनतजतगतिडोलत नशेषसिरसिंधुनबढत कालकेमारनहारप्रकटधरनिब सिअनाथअभयकरइहांहुलसत मगरसूरकेस्वामीअखि लअंतरजामीअसुरअबद्दुष्टअजहूंअसत॥८१॥ राग कान्हरो॥ सोईरसनाजोहरिगुणगावै नैननिकीछविय हेचतुरतासोइमुकुंदमकरंदहिधावै निर्मलचितनोतेईसां चौकृष्णविनाजिहिअवरूनभावै श्रवणनिकीजुयहैअधि

काईहरिजसनितप्रतिश्रवननचावै करतेईजुश्याममजुकोंसे वैचरणनिचलिवृंदावनधावै सूरदासकहैवलिताकीहैंजोसं तनिसोंप्रीतिवढावै ॥ ८२॥ रागधनाश्री॥ रेवौरेछा ड़िविषैकोरचिवो कततूंसुआहोतसेंवरिकोअंतकपासनप चिवो अनङ्गतरङ्गकनककामिनीज्योंहाथरहेगेपचिवो। तजिअभिमानकृष्णकहिवौरेननरकज्वालातचिवो सद्गु रूकह्योकहोहौंतोसोंकृष्णरतनधनसचिवो सूरदासस्वा मीसुमिरनविनुयोगीकपिज्योंनचिवो ॥ ८३॥ रागध नाश्री॥ सवैदिनएकसेनहिंजात सुमिरनभगतिले हुकरिहरिकीजोलगितनकुशलात कवहुंककमलाचपल पायकेरेढेरेढेजात कवहुंकमगमगधूरिटटोरतभोजनकों विलखात वालापनखेलतहीखोयोभक्तिकरतअरसात॥ सूरदासस्वामीकेसेवतपैहौपरमपदतात ॥ ८४॥ राग गुर्जरी॥ हरिरसकवहूंतोजायलहिये वादविवादग रवईरषताएतोदण्डसवसहिये कोमलवचनदीनतास वसोंसदामुदितचितरहिये सोकगयेउपज्योरहैआनंद ऐसेधर्मनिवहिये इतनीजोउपजेमनमहियांयहसुख कहलोकहिये सूरसुजनतेहिअष्टमहासिधिजोभुगते सोहइयें ॥ ८५॥ रागसारंग॥ देखोहरिकोएक सुभाय इतेगंभीरउदारउदधिप्रभुजानसिरोमणिराय। राईजितनीसेवाकोफलमानतमेरूसमान समुझिदास अपराधसिंधुसमवूंदनएकौमान दृष्टिपरसकोहोतचर णपरजानतहोजियऐसी विमुषहुभयेकृपायामुखकीज वचितवौतवतैसी भक्तविरहकातरकरूणमयडोलतपा छेलागे सूरदासऐसेप्रभुकोंकतदीजतपीठिअभागे॥ ॥ ८६॥ रागकेदारो ॥ तुम्हरोकृष्णकहतकहजा त विछुरेमिलनवहुरिकवह्वैहैज्योंतरूवरकेपात शीतवा युकफकंठविरूध्योरसनाटूटिवात प्राणलियेजमजातमू ढ़मतिदेखतजननीतात छिनुएकमाहकोटिजुगवीततन रककीपाछेंवात यहजगप्रीतिसुआसेंवरिज्योंचाखतहीउ

ड़िजात जमकीवांधनिंपरनहिआवतचरण नचिन्तलगात
कहतसूरवृथापादेहीइतनौकतइतरात॥८७॥ रागके
दारो॥ जौमनकबहूहरिकौजांचै आनप्रसंगउपासन
छांडैमनवचक्रमअपनेउरसांचै निशिदिननामसुमिरि
जशुगावैकल्पनमेटिप्रेमरसमांचै यहव्रतधरैलोकमहवि
चरैसमकरिगनैमहामणिकांचै शीतउदयसुखदुखनहि
जानैआयेगयेशोकनहिगांचै जायसमायसूरमहनिधिमैं
वहुरिनउलटिजगतमहनांचै॥८८॥ रागधनाश्री॥
सोइभलोजोहरिजशगावै श्वपचगरिष्टहेतरजसेवकवि
नुंगोपालद्विजजन्मनसावै जोगजज्ञजपतपतीरथभ्रमे
जहैंजहैंजायतहांडहकावै होयअटलभगवंतभजनतें
अन्यआसनश्वरफलपावै कहूंनठौरचरणपङ्कजविनुजो
दसहूदिसिफिरिफिरिआवै सूरदासप्रभुसाधुसंगतेआ
नंदअभयनिशानवजावै॥८९॥ रागनट॥ मनक्र
मवचनतूगोविंदसुधिकरि सुचिरुचिसाधुसमाधिआनिउ
रदीनवंधुकरुणामयउरधरि मिथ्यावादविवादछांडितूविषय
लोभसममायापरहरि चरणप्रतापआनिउरअंतरऔरे
सुखयासुखकेतरहरि वेदहिकह्योसुमृतयोंभाष्यौपावन
पतितनामनिजनरहरि जाकोसुजससुनतअरुगावतजा
यपापसकापैएकभरहरि अजहूंचेतिमूढ़चहुंदिशितेआयो
कालअगनिज्योंझरहरि सवयहजालजंजालपरैगोहरि
विनुकौनकरैगोधरहरि अतिभयभीतनिरखिसागरतन
घनज्योंआनिरहेगोछरहरि सूरकालवरव्यालग्रसतहैंश्री
गोविंदप्रतिपरिकिनियरहरि॥९०॥ रागसोरठ॥
अवमनमानिधौरामदुहाई मनवचक्रमहरिनामहृदयध
रिज्योंगुरुवेदवनाई महागर्तदसमासगरभवसिअधमुख
शीशरहाई इतनीकठिनसहीतैंकतकोंअजहुनतूसमुझा
ई मिटिगयेरागद्वेषसवतनकेनिजहरिप्रीतिलगाई सूर
दासएनामकीमहिमापतितपरमगतिपाई॥९१॥ राग
सोरठ॥ करुमनहरिसोंनेहसांचौ निपरकपटकीअ

टपटी छांडि दै इंद्रियवस राखहि किनि पांचौ सुमिरन कथा
सदा सुखदायक विषय परम विछु वांचौ सूरदास प्रभु हितकै
सुमिरौ जी त्यौ आनंद करिकै नांचौ ॥ ९२ ॥ राग कल्यान
धोखेही धोखे डहकायो समुझि न परी विषय रस गीधौ हरि
हीरा घर मांझ गंवायो ज्यौं कुरंग जल देखि पिवन कों प्यास
न गई दसौं दिशि धायो जनम जनम वहु कर्म किये हैं जनज
न पै आपुन पवंधायो ज्यों शुक सेंवरि सेई आशा लगि निशि
वासर हठि चित्त लगायो रीतौ परौ जवै फल चाख्यौ उडिगयो
तूलतवारो आयो ज्यों कपि डोरि वांधि वाजीगर कन कन को
चौहटे नचायो सूरदास भगवंत भजन विनु काल व्याल पै ड
सेखवायो ॥ ९३ ॥ राग गुर्जरी ॥ प्रभु विन को उ काम न
आयो यह झूठी माया के लीने रतन सो जनम गंवायो कंचन
कलश विचित्र चित्र किये रचि रचि भवन वनायो तामैं तेतत
छिनु गहि काढ्यौ पलु एक रहन न पायो हो तुम्हरे संग आ
ऊंगी कहि त्रिय धुति धुति धन खायो चलत हरी मुख मोरि चो
रि — — सच एकौ पगु नाहिन पहुंचायो वोलि वोलि सुत स्वज
न मित्र जन लीन्हौं सुजस सुहायो परयो ज्ञु काज अंत अंतकसौं उ
हि ढिग आनि वंधायो कोटिजनम भ्रमि भ्रमि हौं हास्यो हरि पद
चित न लगायो और पतित तुम वहुत उधारे सूर कहा विसरा
यो ॥ ९४ ॥ राग गुर्जरी ॥ रे मन मूरख जनम गंवायो क
रि अभिमान विषय सों राच्यौ श्याम शरण नहि आयो यह
संसार फूल सेंवर को सुंदर देखि भुलायो चाखन लाग्यो रूई
उडि गई हाथ कछू नहिं आयो कहा भयो अवके मन सोचे प
हिले नाहि कमायो . कहत सूर भगवंत भजन विनु सिर धुनि
धुनि पछितायो ॥ ९५ ॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि सोइ
है करतु जैसें प्रेम पतङ्ग दीपक सों पावक हूं न डरतु भव दुख
कूपस्नान करि दीपक देखत प्रगट परतु . काल व्याल रज तम
विष ज्वाला कत जड जंतु जरतु अविहित स्वादु विवाद सकल
मति इन लगि भेषु भरतु . यहि विधि भ्रमतु सकल निशि दिन ग
त कछू न काज सरतु अगम सिंधु जतन नि सजि नौका हठि क्र

ममारमरतु सूरदासकेयहैव्रतकृष्णभजिभवजलनिधिउत
रतु ॥९६॥ रागकेदारो ॥ रह्योमनसुमिरनकोपछितायो
यो वहतनुराचिराचिकैविरच्योकियोआपुमनभायो मनकृ
तनदीतरंगतेंजवहीवह्योचल्योंजुसवायो मेल्योकाललाल
जवखेचेंभयोमीनकोहायो कीरपढावतगणिकातारीअजा
मिलसुखपायो ऐसोसूरपतिताहिनदूजोदूरिकरेजमदायो ॥
॥९७॥ रागधनाश्री ॥ भक्तिकवकरिहोजनमुसिरानों
कोटिजतनकीनैमायाकोनोउनमुग्धअघानों वालापनखेल
तहीखोयोतरुणभयेगरवानों कामक्रोधलोभकेवलहरिचे
त्योनहींअयानों वृद्धभयेकफकंठविरूध्योशिरधुनिधुनिप
छितानों सूरश्यामकेनेकविलोकतभवनिधिजायतिरानों॥
॥९८॥ रागधनाश्री ॥ इतउतचितवतजनमगयो इन
मायातृष्णाकेकाजेंदुहुंहगअंधभयो जनमकष्टतेंमातदु
खितभईअतिदुखप्राणसह्यो वेत्रिभुवनपतिविसरिगएत्यों
सुमिरनक्योनरह्यो श्रीभागवतसुन्यौंनहिकवहूंवीचहिभ
टकिमुयो सूरदासकहैंसवजगवूड्योजुगजुगभक्तजियो ॥
॥९९॥ रागधनाश्री ॥ सवैदिनगये विषयकेहेत देख
तहीआपुनपोखोयोकेशभयेसवस्वेत रूंध्योस्वासमुखवैन
नआवतजैसेचंदगह्योशिरकेत तजिगंगोदकपीयेकूपज
लपूजतहाड़ेमेत करिप्रमादगोविंदविसारेवूड्योसवनिस
मेत सूरदासकछुखरचुनलागतकृष्णसुमिरिकिनिलेत ॥
॥१००॥ रागसारंग ॥ जेहितनहरिभजिवोनकियो सो
तनसूकरस्वानमीनज्योंयहिसुखकहाजियो जोजगदीश
ईशसवहिनकोतेहींनचित्तदियो प्रकटजानिजदुनाथविसा
र्योआसामद्यपियो चारिपदारथकेप्रभुदातातिन्हेनमिल्यो
हियो सूरदासरसनावसअपनेहरिननामलियो ॥१०१॥ ।
रागधनाश्री ॥ हरिसोंमीतनदेख्योकोई विपतिकालसु
मिरतनिहिंऔसरआनितिरिछोहोई ग्राहगहेंगजपतिपुक
रायोहाथचक्रलैधाये तजिवैकुंठगरूडतजिश्रीतजिनिकट
दासकेआये दुर्वासाकोश्रापनिवार्योअम्वरीषपतिराखी।

ब्रह्मलोकपर्यंतफिरयौंनहांदेवअनलमुनिसाखी लाखागृह
तेंजरतपांडुसुतवुधिवलनाथउवारे सूरदासप्रभुअपनेज
नकेनानात्रासनिवारे ॥१०२॥ रागधनाश्री ॥ हरिजू
तुमतेकहांनहोय वोलैगुंगपंगुगिरिलंघैअरुगावै अंधा
जगुजोय पतितअजामिलदासीकुविजातिनहूंतोकलिम
लसवधोय रंकसुदामांकियोइंद्रसमपांडवहितकौरवद
लखोय वालकमृतकजिवायदएगुरुजोंआईदरवारेरोय
सूरदासप्रभुइच्छापूरनश्रीगोपालसुमिरहुसवकोय ॥१०
३॥ रागविलावल ॥ क्योंतूगोविंदनामविसारयौ अज
हूंचेतिभजनकरिहरिकोकालफिरंतशिरऊपरभारयौ ध
नसुतदाराकामनआवैजिनहिलागिआपुनपौखोयो सूर
दासभगवंतभजनविनुचल्योपछितायनयनभरिरोयो ॥
१०४॥ रागधनाश्री ॥ माधवजूजोजनतेंविगरै सुनि
कृतज्ञकरुणामयकेशवप्रभुनहिजीयधरै ज्योंशिशुजन
नीजठरअंतरवसिसतअपराधकरै तौउसेवैतनुतोषिपो
षिकैविविकरअंकभरै ह्विजरसनादलिदुखितहोततवतौ
रिसकारिकरै छमिशतछोभक्षीरमधुमिश्रितमुखसमी
पसंचरै जद्यपिविटपजरहतनहितकरिकरकुठारपकरै
तदपिसुभावसुशीलसुशीतलरिपुतनतापुहरै घरविधंसि
हलहननकृषीकरिवैरवीजसंचरै सोसनमुखसुखहितहिस
तौगुणशिशुगुणफरनिफरै कारनकरनअंतअजअजशि
वअपभेदीनडरै यहकलिकालव्यालमुखत्रासितसूरशर
णउवरै ॥१०५॥ रागधनाश्री ॥ माधवमनमरजादत
जी ज्योंगजमत्तजानिहरितुमसोंवातविचारिसजी माथेन
हीमहावतसतगुरुअंकुशज्ञानदृल्यौ धाएअधअवनीअ
तिआतुरशाकरसुसंगकुल्यौ इंद्रीजूथसंगलियेविहरततृ
णकाननमाहें क्रोधशोचजलसोंरतिमानीकामभत्तहित
जाहे औरअधारनाहिकछुसकुचतभ्रमगहिगुहारहे सूर
श्यामकेहरिकरुणामयकवनहिविरदगहे ॥१०६॥ रा
गधनाश्री ॥ हमनंदनंदनमोललिए जमकीफांसिका

रिपुकराएअभयअजातकिए मूँड़मूडाय कंठवनमालाचक्र
केचिन्हदिए माथेतिलकश्रवणतुलसीदलमटियअंगविए
सवकोउकहतगुलामश्यामकेसुनतसिरातहिए सूरदास
प्रभुजूकेचेरेभूठनखायजिए ॥१०७॥ रागधनाश्री
॥ गतिअविगतिजानीनपरै अतिअगाधमनअगमअगो
चरबुद्धिवलकौपसरै कवहुंकरंकरंकतेंराजाकरिशिरछ
त्रधरै कवहुंकतृणडूवतपानीमेकवहंकशिलातरै प्रव
लप्रचण्डमहावपुसायककेहरिभूखमरै अनयासविनउ
द्यमअजगरसहजहिपेटभरै वागरमेसागरकरिडारैठांठँ
नीरभरै सूरपतिततरिजायछिनकमेंजोप्रभुनेकुढरै ॥
॥१०८॥ रागटोडी ॥ भृंगनिनिर्भैचरणकमलमकरंद
गहेजहांननिसाकोत्रास जहांविधिभानसमानएकरससो
वारिजसुखवास जहांकिंजलकभक्तिनवलक्षणकामजा
मसरएक निगमसनकशुकनारदशारदमुनिमनभंवरअ
नेक शिवविरंचिखंजनसमरंजनछिनुछिनुकरतप्रवेस
अखिलकोसतहंवसहिंसुकृतजलप्रकटितश्यामदिनेस।
मुनिमधुकरभ्रमतजिकुमुदिनीकोराजिवशुभकरिकैआ
स सूरदासप्रेममयप्रफुलिततहांचलिकरहिंनिवास॥१०
९॥ रागटोडी ॥ अजहूंसावधानकिंनहोहि मायावि
षमभुजंगिनिकोविषउतरेयोनाहिनतोहिं कृष्णसुमंत्रशु
द्धवनमूरीजिनियममरनजिवायो वारवारश्रवननीकर
होइगुरुगारूडीसुनायो जाग्योमोहमेरुअतिवूटीसुजस
गीतकेगाए सूरगईअज्ञानमूरछाज्ञानसुभेषजखाए॥
॥११०॥ रागटोडी ॥ मनतोसोंकोटिकवारकही स
मुझिनशरणगयोगोविंदकेउरअंतसुलसही सुमिरन
कथाऔरगुरुसेवाएकौनाहिंगही लोभीलंपटविषइव्य
भिचारीऐसेहीनिवही तजिमणिकनकअमोलकहीराका
चकिकिरचगही जैसेंजानिविवेकचतुरतुमतजिपयपि
वतमही आदिब्रह्मरविशेषईशमिलिसोधीसरसदही।
सूरदासभगवंतभजनविनुसत्तुत्रैलोकनही ॥१११॥ रा

रागटोडी॥ गोविंदभजनकरहुयहिवार ईश्वरपारवती उपदेशतुतारकमंत्रजपोंतेहिंद्वार काहेकोअश्वमेधजग कीजैगयाअरूकाशीकेद्वार रामकृष्णाअभिधामनपटतरजो तनगरैहेमहतमार प्रागकलपमाथेकरवटदैचंद्रसूतरनि ग्रहनलकूवार सूरदासभगवंतभजनविनुजमकेदूतकौन टारैमार॥११२॥ रागटोडी॥ जाघटअंतरहरिसुमिरै तासोंकालरूठिका करिहैजोचितचरणधरै कोप्योतातप्र ह्लादभगतकौनामहिलेतडरै खंभफोरिनरसिंहप्रकटभये असुरकेप्राणहरै सहसवरषगजयुद्धकरतभयेछिनुएक ध्यानधरे चक्रधरेंवैकुंठतेधायेवाकीपैजसरै अजामिलद्वि जमहअपराधीअंतकालविगरै सुतसुमिरतनारायणवानी पारेषधधायपरै जहंजहंदुसहकष्टभक्तनकोंतहंतहंसार करै सूरदासश्यामसेयेतेंदुस्तरपारतरै॥११३॥ राग टोडी॥ भजहुनमेरोश्याममुरारी सबसंतनकेजीवन हैंहरिकमलनयनप्यारोहितकारी यासंसारसमुद्रमोहज लतृष्णातरंगउठनितेभारी नावनपाईसुमिरनहरिकोभ जनरहितवूडतसंसारी दीनदयालअधारसबनिकोपरम सुजानअखिलअधिकारी सूरदासकह तुमपांचैजनजन कोजाचकहोतभिखारी॥११४॥ रागटोडी॥ रेम नकृष्णनामकहिलीजै गुरूकेवचनअटलकरिमानहुसा धुसमागमकीजै पढियेगुनियेभक्तिभागवतऔरकहाक थिकीजै कृष्णनामविनुजनमवादिहीवृथाजिवनकहाजी जै कृष्णनामरसबह्योजातहैतृषावंतह्वैपीजै सूरदास हरिशरणताकियेजनमसफलकरिलीजै॥११५॥ राग टोडी॥ भक्तिविनुशूकरकूकरजैसे विगुवगुलाअरुगी धघूघुआआयजनमलियोतैसें ज्योंलोमरीविलाउमोरजौं ररहनअंदरनिवैसे ताहिनअवधिनसुतदारावेउनेंभेदकहो कैसें जीवमारिकेंउदरभरतहैंरहतअशुद्धअनैसें सूरदा सभगवंतभजनविनुजैसेंऊंटखरभैसें॥११६॥ रागटो डी॥ हरिविनुअपनोकोसंसार मायालोभमोहयोंचढि

कालनदीकीधार ज्यौंजनसंगतिहोतनावमेरहतनपरसेपार तैसेंधनदारासुखसंपतिविछुरतलगेनवार मानुषजनमनामनरहरिकोपैयेनवारंवार एतनुछनभंगुरकेकारनकहाकरैगरवुगंवार जैसेअंधअंधकूपमेगनतनखालपनार तैसेंहिसूरवहुतउपदेशहिंसुनिसुनिगयेकैवार ॥११७॥ रागटोड़ी ॥ गरवगोविंदेभावतनाहिं कैसीकरीहिरण्यकश्यपकोंरतीनराखीराखिनमाहिं जगजानीकरतूतिकंसकीनरकासुरमाखौवलवाहिं वरूणविरंचिशक्रशिवमनसिजनरतनकीमनसागहिगाहिं जोवनरूपराजधनधरतीजियजाननतैसीजलदकीछाहिं सूरदासहरिभजेनजेनेविमुखअंतअंतकपुरजाहिं ॥११८॥ रागटोड़ी ॥ यहिविधिवहुतजनमवौरायो विमुखभयोहरिचरणकमलतजिमनसंतोषनपायो जवजवप्रकटभयोजलथलतवअनेकशांतवपुधाखौ कामक्रोधमदअंधविषयतिहिरचेअटलअघमाखौ मृगकपिविप्रगीधगणिकागजकंसकेसिखलतास्यो अघवकवृषभवकीधेनुकहतिभवजलनिधितेनिवाखौ शङ्खचूडमुष्टिकप्रलंवमथिव्याधतृणावर्ततारे रजचाणूरदवनदवनासनव्यालमथनभवहारे जनदुखजानिजमलद्रुमभंजनअतिआतुरह्वै धाये गिरिकरधारिइंद्रमदमर्योदासनिसुखउपजाये रिपुकचगहतद्रुपदतनयाजवशरणशव्दकरहाई मृतकजिवायगुरूकेसुतकोव्याधिपरमगतिपाई नंदवरूणवंधनभयमोचनसूरकुटिलशरणई किहिमिसभजभगवंतचरणकौंसवकोईभईवड़ाई ॥११९॥ रागटोड़ी ॥ नाहिनछांडतमानमंदभागीयहिमनिचितवहुरूपधरेमृगुसोईलोभालकलागी फिरिरुचिकरैवेलिविषयावनभ्रमरविकलविधुजागी अतिरुचिअरूणअमलहरिपदनखअंवुजदलकोंत्यागी कहिगुणज्ञानग्रंथपचिहारेकछूहूसमुझिनआयो अतिकामीअभिमानअंधअपमारगत्वादचखायो नाहिअनाथवंधुकोऊभगजिहियहवातजनावै सूरसुदीनदयालनामलैवारवारगुह

रावै ॥ १२० ॥ राग टोडी ॥ मोसोंपतितनऔरगुसांई १
औगुणमोपैकवहूंनहिंछूटेवहुतपच्योअवताई जनमजन
महौंरह्योभ्रमितहोयकपिगुंजाकीनाई तापरसतगयोशीत
नकवहूंलैलैनिकटतपाई लुवध्योजायकनककामिनिज्यौं
शिशुदेखतजलझाई जिह्वास्वादमीनलौंडासौसुझियोन
हींफहाई मुदितभयोसपनेमेजैसेंपायेनिधिहिपराई जा
गिपरेकछुहाथनलाग्योऐसिसूरप्रभुताई ॥ १२१ ॥ रा
गटोडी ॥ मनवसहोतनाहिजियमेरे जिहिंवाततनतूंवह्यो
फिरतहैसोइसोइलैलैप्रेरे कैसेंकरोकहौंकैसेजशऔरहि
औरखचेरे तुमतोखिलगावतकोठेसिरवैठेदेखतनेरे कहा
करोंपहचलौवहुतदिनविनुअंकुसहिमुकेरे अवकैसूरदा
सप्रभुआपुनपरौंहाथहौंतेरे ॥ १२२ ॥ राग टोडी ॥
तेदिनविसरिगयेयहआये अतिउनमतमोहमदछाक्यौ
फिरतलटेंवगराये तवतिनदिननिजजननिजठरमेंवस्यो
वहुतदुखपाये सोइतूकहौतवहुतोकौनसंगखानपानप
हुंचाये सोइचितधरौशुपिताप्राणपतिजीयतुजाकेज्याये
सूरसुमृगज्यौंसहतुफिरतुहैविषयविषमसरखाये ॥ १२३ ॥
रागकेदारो ॥ मेरीकौनगतिवृजनाथ भजनविमुख
अरुशरणनाहिनफिरतुविषयनिसाथ हौंपतितअपराध
पूरनभरयौकर्मविकार कामकुटिलअरुलोभचितवनिना
थतुमहिविसार उचितअपनीकृपाकारहूतऊजान्योंजाय
सोउकरहुजेचरणसेवैसूरजूठनिखाय ॥ १२४ ॥ राग
मलार ॥ एसेंइकरतअनेकजनमगयेमनसंतोषनपा
यो दिनदिनदीनदुराशालागीसकललोकफिरिआयो सु
निसुनिस्वर्गरसातलभूतलनहींतहींउठिधायो कामक्रो
धमदलोभअगनितेंजरतनकाहुवुझायो लकुचंदनवनि
ताविनोदसुखजिहुजलजडनिवतायो भैंअजानअकुलाय
अधिककरिजरतमाहघृतनायो भ्रमिभ्रमिहौंहारोअव
श्रीपतिदेखिअनलजगछायो सूरदासपैतुम्हरिकृपाविन
क्यौंश्रमजातगंवायो ॥ १२५ ॥ रागधनाश्री ॥ मीत

मवरंकभिखारीमैंसवछांडेउ होतअनेरे सवनजितुमशर
णागतआयोंदृढकरिचरणगहेरे तवप्रसादहमयउद्दतनका
हूनिडरभएघरघेरे सूरदासप्रभुतुमरिकृपातें पायेदुख
जुघनेरे ॥७८॥ रागधनाश्री ॥ तुमकवमोसोंपति
तउधारौ काहेकोहरिविरदवुलावतविनुमसकतिकोना
रो व्याधगीधपूतनाजोतारीतिनकोकहानिहोरो गणि
कातरीआपनीकरनीनामुभयोप्रभुतेरो अजामेलद्विजज
नमजनमकोहुतोपुरातनदास नेकचूकतेंयहगतिकीनीपु
निवैकुंठाहंवास भक्तजानिकेसवजननारेतोक्योंजाएखूट
तवजानिहोंजुमोहितारिहोसूरकूरकविटूट ॥७९॥ राग
धनाश्री ॥ मैंतोअपनीकहीवडाई अपनेकृततेहोंनहि
विरमतुसुनिकृपालव्रजराई जीवनतजेस्वभावजीवकोलो
कविदितदृढताई तोक्योंतजेनाथअपनोंपनुमहप्रभुकीप्र
भुताई पांचलोकमिलिकह्योतुमारोनहिअंतरसुखताई।
तवसुमिरनछलदुर्भरकौंहितमालातिलकुवनाई कांपतुला
गीधरापापतेंताडिनिदेषुजुडाई आपुनभएउधारनजग
कोमैंसुधिनीकेपाई अवमिथ्यातवजापज्ञानसवप्रकटम
ईठकुराई सूरदासउद्धारसहजगतिचिंतासकलगंवाई॥
८०॥ रागनट ॥ जाकेहरिजूकोवरूताकेधौंकौनकोड
रू काहेजियमेसोचकीजैकोहैहोऐसोअवरू सवहिनके
नाथजीवनयाहीकेहाथवेअजरअमरअजितअकाय सो
उवाप्मांथशरणसदाअनाथवदनवेदविदुषदेखोधोंगा
ताहिद सुनोंधोंजिनकीभांतिसकलचलतनीतिअपने
आपुकिनरहत रविननपतअतिवायुनतअनगतिडोलत
कीक्षीरसिंधुनवढत कालकेमारनहारप्रकटधरनिव
षरवांथअभयकरइहांहुलसत प्रगटसूरकेस्वामीअखि
लासपरमीअसुरअवद्रुडुष्टअजहूंअसत ॥८१॥ राग
पतिछिंग सोईरसनाजोहरिगुणगावै नैननिकीछविय
लमिटाई रसकुंदमकरंदहिधावै निर्मलचितनोतेईसां
कौरवराजपनहिअवरूनभावै श्रवणनिकीजुयहेश्र॥

काईहरिजसनितप्रतिश्रवननचावै करतेईजुश्याममजुकोसे
वैचरणनिचलिवृंदावनधावै सूरदासकहैवलिताकीहैंजोसं
तनिसोंप्रीतिवढावै ॥ ८२॥ रागधनाश्री ॥ रेवौरेक्षा
ड़िविषैकोरचिवो कततूंसुआहोतसेंवरिकोअंतकपासनप
चिवो अनङ्गतरङ्गकनककामिनीज्योंहाथरहेगोपचिवो।
तजिअभिमानकृष्णकहिवौरेननरकज्वालातचिवो सदगु
रूकह्यौकहोहौंतोसोंकृष्णरतनधनसचिवो सूरदासस्वा
मीसुमिरनविनुयोगीकपिज्योंनचिवो ॥ ८३॥ रागध
नाश्री ॥ सवैदिनएकसेनहिजात सुमिरनभगतिले
हुकरिहरिकीजोलगितनकुशलात कवहुंककमलाचपल
पायकेटेढेईठैजात कवहुंकमगमगधूरिटटोरतभोजनकों
विलखात वालापनखेलतहीखोयोभक्तिकरतअरसात॥
सूरदासस्वामीकेसेवतपैहौपरमपदतात ॥ ८४॥ राग
गुर्जरी ॥ हरिरसकवहूतोजायलहिये वारविवादग
रवईरषताएतोदणडसवसहिये कोमलवचनदीननतास
वसोंसदामुदितचितरहिये सोकगयेउपज्योरुहैआनंद
ऐसे–धर्मनिवहिये इतनीजोउपजेमनमहियांयहसुख
कहलोकहिये सूरसुकृततेहिअष्टमहासिधिजोभुगते
सोहइयें ॥ ८५॥ रागसारंग ॥ देखोहरिकोएक
सुभाय इतेगंभीरउदारउदधिप्रभुजानसिरोमणिराय।
राईजितनीसेवाकोफलमानतमेरुसमान समुझिदास
अपराधसिंधुसमवूंदनएकौमान दृष्टिपरसकोपा
णपरजानतहोजियऐसी विमुषहुभयेकृपायामुं
वचितवौनवतैसी भक्तविरहकातरकरुणामयडो
लैलागे सूरदासऐसेप्रभुकोंकतदीजतपीठिअ
॥ ८६॥ रागकेदारो ॥ तुम्हरोकृष्णकंहतनि
त विछुरेमिलनवहुरिकवहै हैज्योंतरुवरकेपा
पुकफकंठविरुध्योरसनाटूटिवात प्राणलियेज
ढमतिदेखतजननीतात छिनुएकमाहकोटि ॥ मीत
रकीपाछेंवात यहजगप्रीतिसुआसेंवरि

ड्जात जमकीवांधनियरनहिआवतचरण नचित्तलगात कहतसूरवृथायादेहीइतनौकतइतरात॥८७॥ रागकेदारो॥ जौमनकवहूहरिकौजांचै आनप्रसंगउपासनछांडैमनवचक्रमअपनेउरसांचै निशिदिननामसुमिरिजशुगावैकल्पनमेटिप्रेमरसमांचै यहव्रतधरैलोकमहविचरैसमकरिगनैमहामणिकांचै शीतउदयसुखदुखनहिजानेआयेगयेशोकनहिगांचै जायसमायसूरमहनिधिमैंवहुरिनउलटिजगतमहनांचै॥८८॥ रागधनाश्री॥ सोइभलोजोहरिजशगावै श्वपचगरिष्टहेतरजसेवकविनुगोपालद्विजजन्मनसावै जोगजज्ञजपतपतीरथभ्रमेजहँजहँजायतहोंडहकावै होयअटलभगवंतभजनतेंअन्यआसनश्वरफलपावै कहूंनठौरचरणपङ्कजविनुजोदसहूदिसिफिरिफिरिआवै सूरदासप्रभुसाधुसंगतेंआनंदअभयनिशानवजावै॥८९॥ रागनट॥ मनक्रमवचनतूगोविंदसुधिकरि सुचिरुचिसाधुसमाधिआनिउरदीनवंधुकरुणामयउरधरि मिथ्यावादविवादछांडितूविषयलोभसममायापरहरि चरणप्रतापआनिउरअंतरऔरेसुखयासुखकेतरहरि वेदहिकह्योसुमृतयोंभाष्योपावनपतितनामनिजनरहरि जाकोसुजससुनतअरुगावतजायपासकापैएकभरहरि अजहूंचेतिमूढचहुंदिशितेआयोकालअगनिज्योंझरहरि सवयहजालजंजालपरैगोहरिउ[illegible]करैगोधरहरि अतिभयभीतनिरखिसागरतननाहितरस्व[illegible]निरहेगोकुरहरि सूरकालवरव्यालग्रसतहैंश्रीआवुनहेतिप्रतिकिनियरहरि॥९०॥ रागसोरठ॥ कीखोजा[illegible]मानिधौरामदुहाई मनवचक्रमहरिनामहृदयधरचदूरहूवेदवताई महागर्तदसमासगरभवसिअधमुखत्रासपङ्गाई इतनीकठिनसहीतैंकतकोंअजहुनतूसमुझ्यातिछिंअयेरागद्वेषसवतनकेनिजहरिप्रीतिलगाई सूरलमिटाई [illegible]कीमहिमापतितपरमगतिपाई॥९१॥ रागकौरवराज[illegible]कारूमनहरिसोंनेहसांचो निपटकपटकी [illegible]

टपटी छांडि दै इंद्रियवस राखहि किनि पांचौ सुमिरन कथ सदा सुखदायक विषय परम विषु वांचौ सूरदास प्रभु हितकै सुमिरौ जी त्यौ आनंद करिकै नांचौ ॥९२॥ राग कल्यान धोखेही धोखे डहकायो समुझि न परी विषय रस गीधौ हरि हीरा घर मांझ गंवायो ज्यौं कुरंग जल देखि पिवन कौं पास न गई दसौं दिशि धायो जनम जनम वहु कर्म किये हैं जनम न पै आपुन पवंधायो ज्यौं शुक सेंवरि सेई आशा लगि निशि वासर हठि चित्त लगायो रीतौ परौ जवै फल चाख्यौ उडि गयो तूल तवारो आयो ज्यौं कपि डोरि वांधि वाजीगर कन कन कौ चौहटें नचायो सूरदास भगवंत भजन विनु काल व्याल पैंकु पै खवायो ॥९३॥ राग गुर्जरी ॥ प्रभु विन कौउ काम न आयो यह झूठी माया के लीने रतन सो जनम गंवायो कंचन कलश विचित्र चित्र कियै रचि रचि भवन वनायो तामैं ते तत छिनु गहि काढ्यौ पलु एक रहन न पायो हो तुम्हरे संग आ ऊंगी कहि त्रिय धुति धुति धन खायो चलत हरी सुख मोरि चो रि — —सव एकौ पगु नाहिन पहुंचायो वोलि वोलि सुत स्वज न मित्र जन लीन्हौ सुजस सुहायो परयो जु काज अंत अंतक सौं उ हि ढिग आनि वंधायो कोऊ न भयो भ्रमि भ्रमि हौं हार्यो हरि पद चितन लगायो औरपतित तुम वहुत उधारे सूर कहा विसरा यो ॥९४॥ राग गुर्जरी ॥ रे मन मूरख जनम गंवायो क रि अभिमान विषय सौं राच्यौ श्याम शरण नहि आयो यह संसार फूल सेंवर कौ सुंदर देखि भुलायो चाखन लाग्यौ उडि गई हाथ कछू नहि आयो कहा भयो अव के मन सु हि लेनाहि कमायो कहत सूर भगवंत भजन विनु सिर धुनि पछितायो ॥९५॥ राग सारंग ॥ फिरि फिरि हैं करतु जैसें प्रेम पतङ्ग दीपक सौं पावक हूं न डरतु तन कूप ज्ञान करि दीपक देखत प्रगट परतु काल व्याल विष ज्वाला कत जड जंतु जरतु अविहित स्वादु विवश मति इन लगि भेषु भरतु यहि विधि भ्रमतु सकल ... विनु न ... कछू न काज सरतु अगम सिंधु जतन नि सहि ... मीत

मभारभरतु सूरदासकेयुहैव्रतकृष्णभजिभवजलनिधिउत
रतु॥९६॥ रागकेदारो॥ रह्योमनसुमिरनकोपछिता
यो वहतनुराचिराचिकैविरच्योकियोआपुमनभायो मनकु
तनहीतरंगतेंजवहीवह्योचल्योउसवायो मेल्योकाललाल
जवखैचेंभयोमीनकोहायो कीरपढावतगणिकातारीअजा
मिलसुखपायो ऐसोसूरपतिताहिनदूजोदूरिकरेजमदायो॥
॥९७॥ रागधनाश्री॥ भक्तिकवकरिहोजनमुसिरानों
कोटिजतनकीनैमायाकोतौउनमुग्धअघानों वालापनखेल
तहीखोयोतरुणभयेगरवानों कामक्रोधलोभकेवलहरिचे
स्यौनहींअघानों वृद्धभयेकफकंठविरुध्योशिरधुनिधुनिप
छितानों सूरश्यामकेनेकविलोकतभंवनिधिजायतिरानों॥
॥९८॥ रागधनाश्री॥ इतउतचितवतजनमगयो इन
मायातृष्णाकेकाजेंदुहूंदृगअंधभयो ज..मकष्टतेंमातदु
खितभईअतिदुखप्राणसह्यो वेत्रिभुवनपतिविसरिगएत्यों
सुमिरतक्योंनरह्यो श्रीभागवतसुन्यौंनहिकवहूंवीचहिभ
टकिमुयो सूरदासकहैंसवजगवूड्यौजुगजुगभक्तजियो॥
॥९९॥ रागधनाश्री॥ सवैदिनगयेविषयकेहेत देख
तहीआपुनपोखोयोकेशभयेसवस्वेत रूंध्योस्वासमुखवैन
नआवतजैसें..गह्योशिरकेत तजिगंगोदकपीयेकूपज
लपूजतहाड़े.. करिप्रमादगोविंदविसारेवूड्योसवनिस
मेत सूरदा.. कुखरचुनलागतकृष्णसुमिरिकिनिलेत॥
दुवा.. १००॥ सारंग॥ जेहितनहरिभजिवोनकियो सो
ताहितस्वानमीनज्योंयहिसुखकहाजियो जोजगदीश
आपुनहेस्कोतेहींनचित्तदियो प्रकटज्ञानिजदुनाथविसा
कीखो..मघपियो चारिपदारथकेप्रभुदाताातिन्हेंनमिल्यों
षरचव..हांसरसनावसअपनेटेरिननामलियो॥१०१॥
रागध..श्री॥ हरिसोंमीतनदेख्यौकोई विपतिकालसु
मतिछिनऔसरआनितिरिछोहोई ग्राहगहेंगजपतिमुक
लमिटाई ..कलैधाये तजिवैकुंठगरूडतजिश्रीतजिनिकट
कौरवराज..र्वासाकोश्रापनिवाऱ्यौअम्बरीषपतिरा..

ब्रह्मलोकपर्यंतफिरयौंतहांदेवअनलमुनिसाखी लाखाप
तेंजरतपांडुसुतबुधिवलनाथउवारे सूरदासप्रभुअपनेज
नकेनानात्रासनिवारे ॥१०२॥ रागधनाश्री ॥ हरिजू
तुमतेंकहांनहोय बोलैगुंगपंगुगिरिलंघैअरुगावै अंधा
जगुजोय पतितअजामिलदासीकुविजातिनहूंतोकलिम
लसबधोय रंकसुदामाकियोइंद्रसमपांडवहितकौरवद
लखोय बालकमृतकजिवायदएगुरूजोंआईदरबारेंरोय
सूरदासप्रभुइच्छापूरनश्रीगोपालसुमिरहुसवकोय ॥१०
३॥ रागविलावल ॥ क्योंतूगोविंदनामविसारयौ अज
हूंचेतिभजनकरिहरिकोकालफिरतशिरऊपरभारयौ ध
नसुतदाराकामनआवैजिनहिलागिआपुनपौखोयो सूर
दासभगवंतभजनविनुचल्यौपछितायनयनभरिरोयो ॥
१०४॥ रागधनाश्री ॥ माधवजूजोजननतेंविगरै तुनि
कृतज्ञकरुणामयकेशवप्रभुनहिजीयधरै ज्योंशिशुजन
नीजठरअंतरवसिसतअपराधकरै तोउसे वैतनुतोषिपो
षिकैचिविकरअंकभरै द्विजरसनादलिदुखितहोततवतो
रिसकारिकरै कृमिशतछोभत्तीरमधुमिश्रितमुखसमी
पसचरै जद्यपिविटपजरहतनहितकरिकरकुठारपकरै
तदपिसुभावसुशीलसुशीतलरिपुतनतापुहरै घरविधंसि
हलहतनकृषीकरिवैरवीजसंचरै सोसनमुखसुखहितहिस
तौगुणशिशुगुणफरनिफरै कारनकरनअंतअजअजशि
वअपभेदीनडरै महकलिकालब्यालमुखग्रासितम
णउवरै ॥१०५॥ रागधनाश्री ॥ माधवमन नीज्यों
जी ज्योंगजमलजानिहरितुमसोंवातविचारिसदा मुपा
हीमहावतसतगुरुअंकुशज्ञानटरयौ धाएअधम डोगु
तिआतुरशकरसुसंगकुरयौ इंद्रीजूथसंगलियेवि औ
षणाकाननमाहें क्रोधशोचजलसोंरतिमानीकाम तानि
जाहे औरअधारनाहिकछुसकुचतभ्रमगहियु लाय
श्यामकेहरिकरुणामयकवनहिविरदगहे ॥ अव
रागधनाश्री ॥ हमेंनंदनंदनमोललिए ज… पावित
…ई ॥ मीत

टिसुकराएअभयअजातकिए मूँड़मूड़ाय कंठवनमालाचक्र
केचिन्हदिए माथेतिलकश्रवणतुलसीदलमटिवअंगविए
सवकोउकहतगुलामश्यामकेसुनतसिरातहिए सूरदास
प्रभुजूकेचेरेभूठनखायजिए ॥१०७॥ रागधनाश्री
॥ गतिअविगतिजानीनपरे अतिअगाधमनअगमअगो
चरबुद्धिवलकौंपसरै कवहुंकरंकरंकतेंराजाकरिशिरछ
त्रधरै कवहुंकतृणडूवतपानीमेकवहुंकशिलातरै प्रव
लप्रचण्डमहावपुसायककेहरिभूखमरै अनयासविनउ
द्यमअजगरसहजहिपेटभरै वागरमेसागरकरिडारैढांढों
नीरभरै सूरपतिततरिजायछिनकमेंजोप्रभुनेकुढरै ॥
॥१०८॥ रागटोडी ॥ भृंगनिनिभैंचरणकमलगकरंद
गहेजहांननिसाकोत्रास जहांविधिमानसमानएकरससो
वारिजसुखवास जहांकिंजलकभक्तिनवलक्षणकामजा
मसरएक निगमसनकशुकनारदशारदमुनिमनभंवरअ
नेक शिवविरंचिखंजनरसमरंजनछिनुछिनुकरतप्रवेस
अखिलकोसतहंवसहिंसुकृतजलप्रकटितश्यामदिनेस।
सुनिमधुकरभ्रमतजिकुमुदिनीकोराजिवशुभकरिकैआ
स सूरदासप्रेममयप्रफुलिततहांचलिकरहिंनिवास॥१०
९॥ रागटोडी ॥ अजहूंसावधानकिनहोहिं मायावि
षमभुजंगिनिकोविषउतरयोनाहिनतोहिं कृष्णसुमंत्रशु
डुवनमूरीजिनियममरनजिवायो वारवारश्रवननीकर
डुवांसा ‑‑गारूडीसुनायो जाग्योमोहमेरूअतिवूटीसुजस
नाहितसवमए सूरगईअज्ञानमूर्छाज्ञानसुभेषजखाए॥
आपुनलीनि रागटोडी ॥ मनतोसोंकोटिकवारकही स
कीखोजकदरणागयोगोविंदकेउरअंतसुलसही सुमिरन
षरचढाई अगुरूसेवाएकौनाहिंगही लोभीलंपटविषइन्य
त्रासपढाई ‑सेहीनिवही तजिमणिकनकअमोलकहीराका
चतिछिडाई ‑वगही जैसेंजानिविवेकचतुरतुमतजिपयपि
लमिटाई नारी‑दिव्रस्मरविशेषईशमिलिसोधीसरसदही॥
कौरवराजपंथर‑तभजनविनुसचुत्रैलोकनही ॥१११॥ रा

गटोडी ॥ गोविंदभजनकरहुयहिवार ईश्वरपारबती
उपदेशतुतारकमंत्रजपौंतेहिद्वार काहेकोअश्वमेधजग्य
कीजैगयाप्रयागकाशीकेद्वार रामकृष्णअभिधामनपटतरजो
तनगरैहेमहतमार प्रागकलपमाथेकरवटदैचंदातरनि
ग्रहनलक्षवार सूरदासभगवंतभजनविनुजमकेदूतकौन
टारैमार ॥११२॥ रागटोडी ॥ जाघटअंतरहरिसुमिरै
तासौंकालरूठिका करिहैजोचितचरणधरै कोप्योतातप्र
ह्लादभगतकौनामहिलेतडरै खंभफोरिनरसिंहप्रकटभये
असुरकेप्राणहरै सहसवरषगजयुद्धकरतभयेछिनुएक
ध्यानधरै चक्रधरैंवैकुंठतेधायेवाकीपैजसरै अजामिलद्वि
जमहअपराधीअंतकालविगरै सुतसुमिरतनारायणवानी
पारषधधायपरै जहंजहंदुसहकष्टभक्तनकोंतहंतहंसार
करै सूरदासश्यामसेयेतेंदुस्तरपारतरै ॥११३॥ राग
टोडी ॥ भजहुनमेरोश्याममुरारी सवसंतनकेजीवन
हैंहरिकमलनयनप्यारोहितकारी यासंसारसमुद्रमोहज
लतृष्णातरंगउठतितेभारी नावनपाईसुमिरनहरिकोभ
जनरहितवूडतसंसारी दीनदयालअधारसवनिकोपरम
सुजानअखिलअधिकारी सूरदासकहतुमयाँचैजनजन
कोजाचकहोतभिखारी ॥११४॥ रागटोडी ॥ रेम
नकृष्णनामकहिलीजै गुरूकेवचनअटलकरिमानहुसा
धुसमागमकीजै पढियेगुनियेभक्तिभागवतऔरकहाक
थिकीजै कृष्णनामविनुजनमवादिहीवृथाजिआलीजै
कृष्णनामरसवह्यौजातहैतृषावंतहवैपीजै सूरदासप्रभु
हरिशरणताकियेजनमसफलकरिलीजै ॥११५॥ रागटोडी
टोडी ॥ भक्तिविनुशूकरकूकरजैसे विगुवगुधखौ
धघूघुआआयजनमलियोतैसें ज्योंलोमरीविलस्तानि
ररहतअंदरनिवैसे ताहिनअवधिनसुतदारावेउलटाय
कैसें जीवमारिकेंउदरभरतहैंरहतअशुद्धअंग अव
समगवंतभजनविनुजैसेंऊंटखरभैसें ॥११६॥ पावित
तै ॥ हरिविनुअपनोकोसंसार मायालोभ ॥ भीत

कालनदीकीधार ज्यौंजनसंगतिहोतनावमेरहतनपरसेपा
र तैसेंधनदारासुखसंपतिविछुरतलगैनवार मानुषजन
मनामनरहरिकोपैपेनवारंवार एतनुछनभंगुरकेकारन
कहाकरैगरवुगंवार जैसेअंधअंधकूपमेगनततनखालपना
र तैसेंहिसूरवहुतउपदेशहिंसुनिसुनिगयेकैवार ॥११७॥ रा
गटोड़ी ॥ गरवगोविंदैभावतनाहिं कैसीकरीहिरण्य
कश्यपकोंरतीनराखीराखिनमाहिं जगजानीकरतूनिकंस
कीनरकासुरमासोवलवाहिं वरूणविरंचिशक्रशिवमन
सिजनरतनकीमनसागहिगाहिं जोवनरूपराजधनधरती
जियजाननतैसीजलदकीछाहिं सूरदासहरिभजेनजेते
विमुखअंतअंतकपुरजाहिं ॥११८॥ रागटोडी ॥ यहि
विधिवहुतजनमवौरायो विमुखभयोहरिचरणकमलत
जिमनसंतोषनपायो जवजवप्रकटभयोजलथलतवअ
नेकशांतवपुधासो कामक्रोधमदअंधविषयतिहिरचे
अटलअघमासो मृगकपिविप्रगीधगणिकागजकंसके
सिललतासो अघवकवृषभवकीधेनुकहतिभवजलनि
धितेनिवासो शङ्खचूड़मुष्टिकप्रलंवमथिव्याधतृणावर्तता
रे रजचाणूरदवनदवनासनव्यालमथनभवहारे जनदुख
जानिजमलद्रुमभंजनअतिआतुरह्वै धाये गिरिकरधारि
इंद्रमदमर्द्योदासनिसुखउपजाये रिपुकचगहतद्रुपदतन
याजवशरणशब्दकरहाई मृतकुजिवायगुरूकेसुतकोव्या
उपा—तिपाई नंदवरूणवंधनभयमोचनसूरकुटिलश
नाहितसवमहिमिसभजभगवंतचरणकौंसवकोईभईवड़ा
आपुनलीनि॥ रागटोडी ॥ नाहिनछांडतमांनमंदभागी
कीखोजकढवतवहुरूपधरेमृगुसोईलोभालकलागी फिरि
घरचढाई अलिविषयावनभ्रमरविकलविषुजागी अतिरूचि
त्रासपड़ाई लहरिपदनखअंवुजदलकोंत्यागी कहिगुणज्ञा
नतिछिडाई हारेककहूसमुभिनआयो अतिकामीअभिमा
लमिटाई नारीरगस्वादचखायो नाहिअनाथवंधुकोऊभग
कौरवराजपंथरनावै सूरसुदीनदयालनामलैवारवारगुद

रावै ॥१२०॥ रागटोडी ॥ मोसोंपतितनऔरगुसाईं।
औगुणमोपैकबहूंनहिंछूटेबहुतपच्योअबताई जनमजन
महौंरह्योभ्रमितहोयकपिगुंजाकीनाई तापरसतनगयोशीत
नकबहूंलैलैनिकटतपाई लुबध्योजायकनककामिनिज्यौं
शिशुदेखतजलभाई जिह्वास्वादमीनलौंडास्यौ सुभिपीन
हींफंदाई मुदितभयोसपनेमेजैसेंपायेनिधिहिपराई जा
गिपरेकछुहाथनलाग्योऐसिसूरप्रभुताई ॥१२१॥ रा
गटोडी ॥ मनवसहोतनाहिंजियमेरे जिहिंबाननतूंवहो
फिरतहैसोइसोइलैलैप्रेरे कैसेंकरोकहौंकैसेजशऔरहि
औरखचेरे तुमतोसिलगावतकोठसिरबैठेदेखतनेरे कहा
करोंपहचलौबहुतदिनबिनुअंकुसहिमुकेरे अबकैसूरदा
सप्रभुआपुनपरौंहाथहौंतेरे ॥१२२॥ रागटोडी ॥
तेदिनविसरिगयेयहआये अतिउनमतमोहमदछाकौ
फिरतलटेंबगराये तबतिनदिननिजजननिजठरमेंबस्यौ
बहुतदुखपाये सोइतूकहौतबहुतोकौनसंगखानपानप
हुंचाये सोइचितधरौजुपिताप्राणपतिजीयतुजाकेज्याये
सूरसुमृगनौसहतुफिरतुहैविषयविषमसरखाये ॥१२३॥
रागकेदारो ॥ मेरीकौनगतिव्रजनाथ भजनविमुख
अरुशरणनाहिंनफिरतुविषयनिसाथ हौंपतितअपराध
पूरनभरौकर्मविकार कामकुटिलअरुलोभचितवनिना
थतुमहिंविसार उचितअपनीकृपाकरहूतऊजान्योंजाय
सोउकरहुजेचरणसेवैसूरजूठनिखाय ॥१२४॥ रागगौ।
मलार ॥ एसेंइकरतअनेकजनमगयेमनसंतोषनपा
यो दिनदिनदीनदुराशालागीसकललोकफिरिआयो
निसुनिंस्वर्गरसातलंभूतलतहींतहींउठिधायो
धमरलोमअगनितेंजरतनकाहुवुझायो सुतदारानि
ताविनोदसुखजिहुजलजडनिवतायो मैंअजानकु
अधिककरिजरतमाहघृतनायो भ्रमिभ्रमिहेंअब
श्रीपतिदेखिअनलजगछायो सूरदासप्रभुतुमपावित
कौंश्रमजातगंवायो ॥१२५॥ रागधनाश्री ॥ मीत

भजानिलेहु मनमाहीं अपनेसुखकोंसवजगवांध्यौकोउ काहूकौंनाहीं सुखमेआयसवैमिलिवैठतरहतचहूंदिश घेरे विपतिपरीतवसवसंगछांडेकोउनआवैनेरे घरकीना रिवहुतहितजासोंरहतसदासंगलागी जवइनहंसतजीय हकायाप्रेतप्रेतकहिभागी याविधिकौव्यौपारवन्योंजगता सोंनेहलगायो सूरदासभगवंतभजनविनुनाहकजनमगं वायो ॥१२६॥ रागधनाश्री ॥ सोप्रभुमेरेहिरोषनि वारे कियेअपराधअनेकजनमकेनखसिखभरेविकारे। धरनीपातसिंधुजलपूरनगिरिकंचनमसिडारे सुरतरूव रकीशाखालैकरिलिखतशारदाहारे पतितपावनहरि नामतुम्हारोवेदवखानतचारे सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलन कोकरतफिरतहेरिहारे॥ ३२७॥ रागधनाश्री ॥ हरिविनुमीतनहिकोउतेरे सुनिमनकहतपुकारिहोंतो सोंभजिगोपालकहेमेरे यासंसारविषयविषसागररहतसदा सवघेरे सूरदासप्रभुअंतकालमेइनविनुकोउनआवत नेरे ॥१२८॥ रागधनाश्री ॥ दीनकोदयालुसुन्यो अभयदानदाता सांचीतुम्हारीविरदावलिजगतकेपितु माता व्याधगीधगजगणिकाइनमेंकोउज्ञाता सुमिरततु मतवहीआएत्रिभुवनविख्याता कंसकेशिदुष्टमारिमुष्टि ककिय्रघाता अपनेध्रुवकाजराजकेतिकयहवाता तीन लोकविभवदियोतंदुलकेखाता सरवसप्रभुरीझदेतनुलसी दुर्वासाचक्रो रजेहिसामिमांगितनमनअनुराता अपनीप्रभु ताहितसवमः जाननाता ॥१२९॥ रागधनाश्री ॥ आपुनलीनिते सवहोय जेअपनोपुरुषारथमानेअतिही कीखोजकढ़ साधनमंत्रजंत्रउद्यमवलएसवराखेधोय जे षरचढाई अ व्योनंदनंदनमेटिसकेनहिकोय दुखसुखला त्रासपड़ाई गई जतुमकंतहंमरतहोरोय सूरदासस्वामीक पतिछिडाई सके चरणमनपोय ॥ १३०॥ रागमलार॥ लमिटाई नारीत्र रावै नाहिनपूतपितासमकोऊजलमेशैल कौरवराजपंथरचोदिहोयवहुतेरेछीनछीरसरपावै जादि

॥ ८ ॥

सहायहोयश्रीपतिकोविनुहिंआ ईप्यावै काहेकोचिंता कीजैजोचरणनिचितलावै शंकटसूरसहायहोयप्रभुवस नप्रवाहवढावै ॥१३१॥ रागविलावल ॥ जहांजहां सुमिरेतुमजिहिंविधितहींतहींउठिधायेहो दीनउधारन भक्तकृपानिधिवेदपुराणनिगायेहो सुतकुवेरकेमनविषय नमदनयननिछायेहो द्विजकेश्रापतेंभएजमलतरूतिहि लगिआपुवंधायेहो परममलीनदीनद्विजदेखतताकेतंदुल खायेहो देसंपतिवाकीपत्नीकेमनअभिलाषपुजायेहो क लानिधानसकलगुणसागरगुरूधोंकहापढ़ायेहो तिहि उपकारमृतकसुतजाचेतेजमपुरतेंल्यायेहो कतमोसेंअ पराधीमाधवकेतिकसुगतिपठायेहो सूरदासप्रभुकरूणा सागरपावनविरदकहायेहो ॥१३२॥ रागआसावरी ॥ सोइप्रभुकरोकछूदीनदयाल जातेंजनछिनुचरणन छाडेकरूणासागरभक्तकृपाल इंद्रीअजितवुद्धिविषयेरत मनकीअनुदिनउलटीचाल कामक्रोधमदलोभमहाभय अहनिसिनाथरटतवेहाल जोगयज्ञजपतपतीरथव्रतइ नमेंएकोअंगनभाल कहांकरोकिहिंभांतिरिझाऊंहोतु मकोसुंदरनंदलाल सुनिममरथसर्वज्ञकृपानिधिअशर णशरणहरणजगजालकृपानिधानसूरकीयहगतिकासों कृपणकहेयहिकाल ॥१३३॥ रागधनाश्री ॥ गुसा ईदीनकेदयालसुनोंपरमदानिदाता जाकीयहसांचीविर दावलिभक्तनकेपितुमाता कंसकेसिमुष्टिकमुरध्याजाय मघाता धाएगजराजकाजकेतिकयहवाता ...त्रा... जव्याधअधमदनमेंकोउज्ञाता आनकहतन...पा ल्योंनहिंजाता गौतमकीवामनरीतनकुपरस...होगु कुटिलतारितारिकहाहोंगरवाता रीझिदेतसर...श्री नकतुलसिपाता कहाभयोदोऊलोकदएतंदुल...तानि भागतहैसूरत्यागजिहिंतनुमतुराता अपनी...लाय हुजासोंतुममाता ॥१३४॥ रागगौरी ॥...अव कैश्रीराखिलेहुनाथ कृपाकरीजुगुरूजनप...पावित ...॥ मीत

हिहाथ अहंभावतेंतुमविसराएइतनेझूठेसाथ पखोजुमद सागरप्राकृतवसवांध्यौफिरोअनाथ भ्रमितमयोजैसेंमृ गचितवतदेखिदेखिभ्रमिपाथ जनमतलिख्योसंतकीसं गतिकह्योसुन्योंगुणगाथ कर्मधर्मतीरथविनुराधनहैग एसकलअकाथ अभयदानदेअपनिभुजाधरिसूरदासके माथ ॥१३५॥ रागसारंग ॥ मेरेजियऐसीआनिव नी छांडिगोपालऔरजोसुमिरोंतोलाजेजननी मनक्रम वचनऔरनहीचितवोंउ वकदश्यामधनी विषयकोमेरू कहालैकीजैअमृतएककनी कहलैकरोंकाचकोसंग्रहत्या गिअमोलमनी सूरदासभगवंतभजनकोतजीजातिअपनी ॥१३६॥ रागसारंग ॥ अंतकेदिनकोहैराम मातपिता वंधुसुततौलगुजौलगुजियकोकाम आमिषरूधिरअस्थिअं गजौलोंजौलोंकोमलचाम तौलगुयहसंसारसगोहैजौलगु लेहिननाम इतनीजोजानतमनमूरखमानतयाहीधाम छां डिनकहतरसवभवईरूवृंदावनसोठाम ॥१३७॥ राग गौरी ॥ मोहनकेमुखऊपरवारी देखतनयनसवैसुख उपजतवारवारतातेंवलिहारी ब्रह्मावालवछरूआहरिग योसोततक्षणसारिखेसंवारी कीन्होंकोपइंद्रवरषाऋतुलीला लालगोवर्द्धनधारी पांडवजरतदेखिपुरूषोत्तमप्राणनाथद्रो पदीपुकारी तीनलोककेतापनिवारनंसेवकसूरश्यामसुख कारी ॥१३८॥ हरिदासनिकीसवैवडाई अंवरीषहितद्विज दुर्वासाचक्रछांडिकेकूकपराई दानवदुष्टअसुरकोंवालक ताहितसवमर्जादाढाई भक्तराजकुंतीकेसुतहितरथचढि आपुनलीनिलज़ाई शिवब्रह्माजाकोंवरदीनोंअंतसवनि कीखोजकढाई हरिपदकमलप्रतापतेंजतेंध्रुवपदवीलैसि षरचढाई अजामिलगणिकारतद्विजसुतसुतसुमिरतजम त्रासपड़ाई गजदुखजानितवहींउठिधाएग्राहमुखनितेंवि पतिछुडाई सत्रआंगिरसदेवजजनकोंकर्मग्रंथिहूंनसक लमिटाई नारीव्रजपतिनामनेहसुनिरसनानाअर्पनकोधाई कौरवराजपंथरचनाकरिश्रीपतिकोशोभादिखराई आपन

विदुरसदनपगुधारेसदास्वभावसाधुसुखदाई सकलले
ककीरतिमचिगावैहरिजनप्रेमनिसानमढाई कहांलौंकों
कृपासागरकोसूरदासनाहिनसुघराई ॥ १३९॥ रागगौरी
॥ तुमरीएकवड़ीठकुराई प्रतिदिनजनजनकर्मसवासन
नामहरेंअढुराई कुसुमितधर्मकर्मकूमारगजेकोउकरतव
नाई तदपिविमुखपांतीजुगनीयतभक्तिहृदैनहिआई भक्ति
पंथमेरेअतिनियरोजवतवकीरतिगाई भक्ताधिकारसूरल
खिपायोभजनछापनहिपाई ॥१४०॥ रागधनाश्री ॥
ऐसेभगवंतभक्तहितकारी जहांजहांजिहिकालसंभारेतहं
तहंत्रासनिवारी धर्मपुत्रजवयज्ञउपायोद्विजमुखहोइपनु
लीन्हों अश्वनिमित्तउत्तरदिसिकेपथगमनधनंजयकीन्हों
अहिपतिसुतासुवनसन्मुखहोपवचनकह्योएकहीनों पा
रथविमलवभ्रुवाहनकोंशीसखिलौंनादीनो इतनीसुनत
कुंतीउठिधाईवरषतलोचननीर पुत्रकवंधअंकभरिलीनों
धरतनछिनुइकधीर लैलैश्रोणहृदयलपटावतचुंवतिभु
जागम्भीर स्वागतप्राणनिरखिसापकधनुगतिमतिविक
लशरीर ठाढ़ेभीमनकुलसहदेवाअरूभूपतिसवविष्णुसमे
त पौढ़ेकहासमरसज्यासुतउठिकिनउत्तरूदेत कष्टितभ
येकछुमंत्रनपुरईकीनेमोहअचेत पारथवैठिवंधुकोगर्जे
हिपुरईहौंकुरुषेत काकोवदननिहारिद्रोपदीदीनदुखीसं
भरिहै काकीध्वजावैठिकपिकिलकहिकिहिभयदुर्जनडरि
हैं काकेहितश्रीपतियहयेहैंकोसंकटरसाकरिहैं कोको
रवदलसिंधुमथनकरियादुखपारउतरिहैं चिंताहानिचि
तैअंतरगतिनागलोककोंधाये पारथशीशसोधिअष्टाकु
लतवयदुनंदनलाये अमृतगिरावहुवरषिसूरप्रभुभुजगहि
पार्थउठाये अश्वसमेतवभ्रुवाहनलैसुफलयज्ञहितआये
॥१४१॥ रागधनाश्री ॥ अधमकीजुदेखीअधमाई
तुमत्रिभुवनपतिनाथहमारोमोपैकहीनजाई जवतेंजनम
मरणअंतरहरिकरतनअघहिअघाई अजहूंलौंमनमगन
कामरतविपरतिनहिउपजाई परमअज्ञानतपतिनहिजड़

मतियहवड़िमूरखताई पांचौदेखिठढ़ैहैंठगुहठिहिठगोरी
खाई स्मृतिवेदपंथहरिपुरकेतातेंदियोभुलाई कंटककुटि
लकवनिकाननमधुसोतोदियोदिखाई अवकहकहोंसवैजा
नतहौमेरीकुमतिकन्हाई सूरपतितकोनाहिकहूंगतिराखि
लेहुशरणाई ॥१४२॥ रागधनाश्री ॥ तेजनचाहैंकृ
पानुम्हारी जिनकेवसअनेकअनमिषगणअनुचरआज्ञा
कारी सुनिसुतरहेमतश्रुतिसार जेमततुमकोंजननिमग
स्योजानिजगआधार विपुलविथाविलासमनगतिमोहत
नजंजार तजितभ्रमश्रमशोकदुखसुखकृष्णाचरणआधा
र औरअखिलउपायअनुदिनजोगव्रततपदान सूरदास
अनेकविधिनहिचरणभजनसमान ॥१४३॥ रागधना
श्री ॥ अपनेकोकौनआदरदेय ज्योंवालकअपराधको
टिकरैमातनमारैतेय तेवेलीकैसेंदहियतहैंजेअपनेरस
भेय श्रीशंकरवहुरतनत्यागिकेंविषहिकंठलपटेय माता
असततीरविनुसुतमरैअजाकंठकुचसेय यद्यपिसूरम
हापतितहैपतितपावनतुमतेय ॥१४४॥ रागधनाश्री
॥ ऐसेमाधवमीतहमारे सदासहायकियोसुखदियोशंक
टहुशरखवारे जिनलाक्षागृहजरतउवारेद्रोपदिलाजनि
वारी वसनप्रवाहवह्योअंवरतेंजवकहिनाथपुकारी जि
नभारथपारथरथहांक्योंद्विजहिप्रतिज्ञाकीनी टूटतवज्रवा
णावलिछूटतपीठिआनिप्रभुदीनी आपुनकरतहरतपुनि
आपुनऔरनदूजोकोई रथपरवैठिवटपत्रसैनकरिप्रलय
करतहैओई तेककछुकरिअभिमानआपनोंवोल्योवचनअ
नेरो तातेंसूरप्रभुवलकरिराख्योगर्वप्रहास्योतेरो ॥१४५॥
रागभैरव ॥ ऐसेंहिवसियेव्रजकीवीथनि साधुनिकेपन
वारेचुनिचुनिउदरजुभरियेसीथनि पैंडेसेकेवसनवीनित
नछायापरमपुनीतनि कुंजकुंजतरलोटिलोटिरचिरजला
गेरंगीतनि निशिदिननिरखिजशोदानंदनअरुजमुनाजल
पीतनि दरशनसूरहोततनपावनदरशनमिलतअतीथनि
॥१४६॥ रागआसावरी ॥ हरिजूमोसोंपतितनआन

मनक्रमवचनपापजेकीन्हेतिनकोनहींप्रमान चित्रगुप्त
महारलिखतहैमेरेपातकभारि तिनहूंत्राहिकरीसुनिये
णकागदडीन्हेडारि औरनकोंजमकेअनुसासनकिंकरको
टिकधावै सुनिमेरीअपराधअधमईकोउनिकटनहिंआवै
होंऐसोतुमवैसेपावनगावतहैजेता रे अवगाहौपूरणगु
णस्वामीसूरसेअधमउधारे ॥१४७॥ रागसारंग॥
अवहोंहरिशरणागतआयो कृपानिधानसुदृष्टिहेरियेजि
तितनअपनायो तालमृदंगपांचइंद्रिनिमिलिवीनावेनुव
जायो मनमेरेनटकेनायकउ नतिनहींनांचनचायो उघ
र्योसकलसंगितभवसागरअंगनिअंगवनायो कामक्रो
धमदलोभमोहकेताननतरंगनिगायो सूरअनेकदेहधरि
भूतलनानाभावदिखायो नांच्योनाचलक्षचौरासीकहूंन
पूरोपायो ॥१४८॥ रागजैतश्री ॥ अवहोंसवदिशि
हेरिरह्यौ कोऊनहिंराखनकरूणामयअतिवलग्राहगह्यो
सवस्वारथीअसुरसुरनरमुनिकलश्रमआनिकरै तारन
उदिततिमिरनहिनाशैविनुरविरूपधरै इतनीसुनिआये
कमलापतिनिजकरचक्रलिये हतिगजशत्रुसूरकेस्वामी
सवसुखआनिदिये ॥१४९॥ रागधनाश्री ॥ कहो
शुकश्रीभागवतविचारि हरिकीभक्तिजुगहिजुगवरधेऔ
रधरमदिनचारि चिंतातजोपरीक्षितराजासुनिसिखसां
चिहमारि कमलनयनकीलीलागावतटरिगयेनेकविका
रि सतजुगसतत्रेतातपकीनोद्वापरपूजाचारि सूरभजन
याकलिमेंकीजेलज्जाकाननिवारि ॥१५०॥ रागजंग
ला॥ तुम्हारोकृष्णकहतकहजात विछुरेमिलनंवहुरि
कवअइएज्योंतरूवरकेपात सीतवातकंफकंठविरोध्यौदे
खतजननीजात छिनएकमाहिंकोटिजुगवीततनरकीक्रि
तनीवात यहजगप्रीतसुआसैंवरज्योंचाखतहीउडिजात
सूरदासओछेजीवनकोंकाहेकोइतरात ॥१५१॥ रागवि
लावल ॥ गोविंदभजनकरोयहिवार शंकरपारवतीउ
पदेशततारकमंत्रअपार अश्वमेधयज्ञकोकीजेगयाश्राद्ध

काशीकेदार रामनामसरतेउनपूजोज्योंतनगारेहैमार सहस
वारजीवतहैवरसोंचक्रव्रतरजधार सूरदासभगवंतभजन
विनहोतपहैजमद्वार ॥ १५२॥ रागविलावल ॥ रे म
नसुमिरिहरिहरि सतयुगमांहिनामसरपरतीतकरिकरि
हरिनामहरिनांकुशविसारोउठो वरवरवरि प्रह्लादहेतु
जनअसुरमारोनाहिंडरडरडरि गजगीधगणिकाव्याध
केअघगणगिरिगिरिगिरि चरणअंबुजबुद्धिभाजनजल
भरहिभरिभरि द्रोपदीकेलाजकारणदावपरपरपरि पां
डुसुतकेविघ्नटारेगएटरिटरिटरि करनदुरयोधनदुसास
नसकुनिअरअरअरि सुतहेतअजामिलनामलीन्हौंगयो
तरतरतरि चारिफलकेदानहैप्रभुरहेफरफरफरि सूरश्री
गोपालहिरदेराखिधरिधरिधरि ॥ १५३ ॥ रागधना
श्री ॥ विचारतहीलागेदिनजान सजलसरीरकाकही
हीनोंकोमलकेहिविधिराखेप्रान जोगनयज्ञध्याननहिंसे
वासतसंगतनहिज्ञान जिह्वास्वादविषयकेकारनआपु
घटैदिनमान औरउपायनाहिरेवौरे सुनतोयहदेकान सू
रदासअवहोतविलंबनभजरेसारंगपान ॥ १५४॥ रा
गधनाश्री ॥ अवमैजानीदेहवुढानी शीसपांवधरि
कह्योनमानेतनकीदसासिरानी आनकहतआनेकहिआ
वतनयननाकवहेपानी मिटिगइचमकदमकअंगअंग
कीगइजुमतिहिरानी नाहिरहीकछुसुधितनमनकीहैहै
वातविरानी सूरदासप्रभुअवहिंचेतलोभजलेसारंगपानी
॥१५५॥ तथा ॥ मनतोसोंकेतिकहिसमुझाई नंदनं
दनकेचरणकमलभजितजिपाखंडचतुराई सुखसंपत
दारासुतहेंजगभूठसवसमुदाई छिनभीतरएसेवेश्याम
विनुअंतनहींसंगजाई जनमतमरतवहुतजुगवीतेअजहूंलाज
नआई सूरदासभगवंतभजनविनुभूठेजनमगंवाई ॥१५
६॥ रागविलावल ॥ जेहितनहरिकोभजनकियो यहे
लोकपरलोकसुफलहोताकोधन्यजियो संतसमागमश्री
गुरूसेवाअमृतरसज्योंपियो सूरदासधनभागताहिकोह

रिचरननचितदियो ॥१५७॥ रागमारू ॥ अवसरहो लैहारो मानुषजनमपाइनरबौरेहरिकोभजनविसारो वूंदतेसाजकियोतनसुंदररूपसंवारो जठरअग्निअंतर ऊरधमुखजिनदसमासउचारो अंधअचेतमूढमतिबौरे सोप्रभुक्योंनसम्हारो पहिरपटंबरकरिआंडवर यहतनह टसिंगारो कामक्रोधमदलोभत्रियारतिवहुविधिकाजसि गारो मरनविसारिजीवनहिजान्योंवहुउद्यमजियधारो सुतदाराकेमोहअचेविषहरिअमृतफलडारो झूठसांच करिंमायाजोरीरचिरचिभवनउसारो कालघरीपूरनभइ जादिनतनहोत्यागसिधारो प्रेतप्रेततेरोनामपयोनरझो रीवांधिनिकारो जेहिसुतकेहितविमुखगोविंदतेंप्रथमेंमु खजिनजारो भाईवंधुकुटुंबसहोदरसवमिलयहैविचारो जैसेकर्मलहोफलतैसेतिनकातोरिउखारो सतगुरूकोउ पदेशहृदयधरिजिनदुखसकलनिवारो हरिभजुविलंवछां डिसूरजप्रभुऊंचेटेरपुकारो ॥१५८॥ रागविलावल॥ भृंगीरिभजुचरणकमलपदजहंनिसिकोनहित्रास जबवि धुभानसमानएकरससुरवरिजसुखरास जहांकंजलजा भक्तिहोतनहिलच्छनकामज्ञानरसअंग निगमसंगसुख सारदनारदभवरसुभृंगअनंग शिवविरंचिखंजनमनरंज नछिनछिनप्रकटप्रवेश सुनुमधुकरभ्रमत्यागकुसुंदन नाहिनतहंराकेश सहससुक्रीडाकरतरमापतकोटिकुसू र्यप्रकास सूरजप्रभुसुगंधमेप्रफुलितनहैंचलकरियेवास ॥१५९॥ रागविहागरो ॥ भजमनचरणसंकटहरन सनकशंकरध्यानध्यावननिगमअशरनशरन शेषसार दकहेनारदसंतचिंततचरन पदपरागप्रतापदुर्लभरमा कोहितकरन परसगंगाभईपावनतिहूंपुरधरधरन चि त्तचेतनकरतअंतःकरनतारनतरन गएतारिलैनामकेते संतहरिपुरधरन जासुपदरजपरसिगोतमनारिगतिउद्धरन जाकिमहिमाप्रकटकहतनधोएपगशिरधरन सोइ कृपापदमकरंदपावनऔरनहिशिरपरन सूरप्रभुचरण

रविंदतेंमिटेंजन्मऔमरन॥९६०॥ रागबिलावल॥
जादिनसंतपावनेआवत तीर्थकोटिअस्नानकरनफलजै
सोदरशनपावत नितविनोददिनदिनप्रतिउनकेचरणक
मलचितलावत मनवचकर्मऔरनहिंजानत सुमिरतऔ
सुमिरावत मिथ्यावादउपाधिरहतहोंविमलविमलजस
गावत सूरदास भक्तिकरतिनकेजेहरिसुरनकरावत॥
॥९६१॥ रागविहागरो॥ गर्वगोविंदहिभावतनाहीं
केशीकरीहिरण्यकश्यपसोंप्रगटहुएछिनमाहीं जगजा
नेकरतूतिकंसकीवृषभासुरमारोंपलमाहीं ब्रह्माइंद्रादि
कपहिचानेगर्भआदिकेमाहीं जोवनरूपराजधनधरती
जैसेजलदकीछाई सूरदासहरिभजोगर्भतजिविमुखअ
गतिकोजाई॥९६२॥सुनिनृपलाग्योकरनविचार झूठेनातेजग
तकेसुतकलत्रपरिवार चलतनकोऊसंगचलेगोमोरिर
हीमुखनारि गाढेआवतकामसामहीदेखोसूरविचारि॥
॥९६२॥ रागझझोटी॥ जादिनमनपंछीउडिजैहैं।
तादिनतेरेतनुतरवरके सवैपातझरजैहैं यादेहीकोगर्व
नकरियेस्यारकागऔरगिद्धखैहैं तीननामतनविष्टाकृ
मिहैनातनखाकउडेहैं कहंवहनीरकहांवहशोभाकहंर
गरूपदिखैहैं जिनलोगनसोंनेहकरतुहैतेहीदेखिघिनै
हैं घरकेकहतसवारेकाढोभूतहोयघरखैहैं जिनपुत्रन
हिंवहुतप्रतिपाल्योदेवीदेवमनैये तेइलैवांसदयोखोपडी
मेंशीसफोटविखरैये अजहूंमूढकरोसतसंगतिसंतनमें
कछुपैहै नरवपुधरनजननहिहरिकोजमकीमारगुखैहै
सूरदासभगवंतभजनविनुवृथासुजन्मगवैहै॥ ९६३ ॥
रागकान्हरो ॥ धनिशुकमुनिभागवतवखान्यों गुरु
कीकृपाभईतवपूरनतवरसनाकहिजान्यों धन्यश्यामवृं
दावनकोसुखसंतनमातेजान्यों जोरसरासरंगहरिकीन्हो
वेदनहींठहरान्यों सुरनरमुनिमोहतसवकीन्हेशिवहिस
माधिभुलान्यों सूरदासनहंनैनवसायेऔरकहूंचितनहि
ठान्यों॥९६४॥ रागकान्हरो ॥ अवगतिगतिकछुक

हननआवै जोमूँगोमीठेरसकोफलअंतरगतहीभावै प्र
स्वादसवसोंनिरअंतरअमितदोषउपजावै मनमानेकोअग
मअगोचरसोजानेसोपावै यहैविचारहियेसूरजप्रभुसगुन
लीलापदगावै ॥९६५॥ रागविहाग ॥ तोपरिजगत
बडेजुगवीते गुनपासाक्रमचौकंरसाचौसारिनकवहूंजीते।
दिसफरचारमनोरथघरफिरिफेरिफेरिगुनआवै कापको
धमिलिलोभकेसंगमखेलतहारिनपावै मातगर्भस्थितिपि
इपितादशमासउदरसेजारै जनमछूटीछकऔरवधाईदु
इछकूदुइपुनिपारै मुंडनकरनवेधव्रतवंधविवाहगवनगृ
हवासी आलिंगनचुंवनपरिरंभननखछुतचारूपरस्परहां
सी केतिककरणवेलिचंवेलीसुमनसुगंधसिचाये रचहि
तलपनिसिभोगचतुरसमवहुतइकादशपाये उरपरसत
सवअंगविलोकतक्रीडतसुखसुखजीके चोलीचीरअलक
भूषनफिरिसाजतपियमवनीके नखसिखसाजिसिंगारस
कलतियसुंदरवदननिहारत विधिविलाससकल कौतुक
रसछदससअंकभरिडारत जोवनमदजनमदमारकमदध
नमदविद्यामदमारी कामविवसपरनारिभजतदुइपंचसर
हिफिरिमारी पौरिपगारिमहलमंदिररचिराजतअंगअटा
री भीतरभवनविचित्रविराजतपंचदुवारसद्वारी कृषीव
निजव्यौहारग्रामपतिहैवांधतदरहाथी करिअभिमानहरी
सोंवेमुखसंगनहीकोउसाथी रतनरजतकंचनमुक्तामनि
मानिकसंचितकंसकसि छहसुनिगुननछहोरसविलसत
कहतअठारहहंसिहंसि परिवातेपंचमीदशमीकहुंपोनर
कानितकीन्हा पंजातीनिपरेनीकीविधिविप्रनिभोजनदीन्हा
स्वजनसमधिपरिवारदासदासीजनसवकोहितकारी दाव
धावगतिदेखिकरतिरनिदासीपंजापारतन्यारी संध्यातिमिर
ईदुदुविधादुइठोकनिगमपथचालत श्रवनपुराणसिला
तुलसीदलपूजितदुखितहिपालत पंचवरषदसवरषऔरछक
जुगखेलहुखिलवारी सिसुगईजीतकिशोरकालहतिमनु
कांचीकरिडारी पुनिपौछकऔरोछकपंजासाजिसारिसंग

कोहौ तिननेदावबहुरिफिरिखेलौतरूनविरधजुगजोखो अमावसपुन्योंसंक्रांतिग्रहनछिजकरमभवोमेलत एकादशीद्वादशीसंजमकछूदेतकछुकखेलत मंगलबुधगुरुशुक्रभानशशिशांतिकरतग्रहनीके राहुकेतचंद्रमासुसंयुतकछूतनपतहितजीके सैनउठानअमईविनाजलउपवासनतनसाधेदवौदशीजनमनिशाशिवपांचचारिमनवांधे द्वारावतीगोमतीपुष्करतीर्थप्रयागअनहाये गईनमनकीकठिनमलिनताकहाभयोभ्रमिआये वारहवनव्रजकेपरिदछनपंचद्वादशेपेषत जपतपसंजमनेमधरमव्रतकरिकरिकष्टसकेलत लोचनश्रवणतुचारसनाऐसवरसकोनहिंकांधे सुधिवुधिसुमतिसुरजिगइदसनिधजुराजूगविधिवांधे धरतचरननिलरतलकुटलेचलननवलकरकांपत कासस कफकरतनगिरिधरधुकतद्दाविछुरतभाषत सुतवनितादिहितपांचोनेहूनातोसवहीटूटे दावकुदावपरेदुइपंचतजोरामिलुजुगफूटे वालकतरूनविरधअथजरजितिसारीढिगहारी सूरएकयोंनामविनानरफिरिफिरिवाजीहारी। ॥१६६॥ रागधनाश्री ॥ जन्मगंवायोउग्नयवांइ भजेनचरणश्यामसुंदरकेरह्योविलोकतझाई धनजोवनमदएंडेंइएडोंताकतफिरेपराई लालचुलुब्धस्वानझपटनज्योंतेउहाथनआई रंचकरचिसुखकांचलागिकतकंचनरासिगंवाई सूरदासप्रभुछांडिसुधारसमरतविषयविषखाई ॥१६७॥ रागधनाश्री ॥ सोकहाजुमैंनकियोजेचितधरिहो पतितपावनविरदप्रकटकोनिपांतिकरिहो जननीअठराहसुचिततिनकोदुखदीन्हों मुधितेलतमारूगतिहिअपनेगवनकीन्हों जवतेंजगजनमुपाईजीवनामुकहायो तवतेंमोहिऔगुनगहेऔरनकछुआयो असतसंगतस्वादलंपटकपटगुरुद्रोही जेतेअपराधकहिअंतलागतसवमोही सुकृतीसुचिसेवकरुचिकहिनजीवभावे प्रभुकीप्रभुतावहैजुदीनशरनपावे श्यामसुंदरकमलनैनसकलअंतरजामी विनतीकहोंकोनसूरकूरकुटिलकामी ॥ १६८ ॥ रागसोरठ ॥ ज्योंप

सुमेरोदोषविचारि कियेअपराधअनेकजनमभरि
रूपधस्योअधिकारी भूमिपत्रसिंधुमसिकरिकेगि
नमिलिगारो सुरतरूवरकीसाखालेखनिलिखनहा
हारो पुनितउधारनविरदविदितजगवेदपुरानपु
रश्यामहोपतितशिरोमनितारिसकौतौतारो ॥
रागधनाश्री ॥ जनमतोऐसेहीवीतगयो जैसे
दारथपाएलोभविसाहिलयो वहुतकजन्मपुरी
शूकरस्वानभयो अवमेरीमेरीकरिवौरेवहुरोंवीजवपा
रकोनामपारगामीहोसोतुहिंश्यामदयो तैंजदुनारिकेल
कपिकरज्योंपायोनाहिपयो रजनीगतवासरमृगतृष्णा
मेहरिकोनवयो सूरनंदनंदनजिनिचिसस्योआपुहिआप
हयो ॥१७०॥ रागधनाश्री ॥ अवमोहिभीजनकों
नउवारो दीनवंधुकरूणानिधिस्वामीजनकेदुःखनिवारो
ममताघटामोहकीवुंदेसलितामेंनअपारो वूडतकतहुंथा
हनहिपावतगुरुजनओटअधारो गरजनक्रोधलोभकेना
दोसूझतकहुंनउधारो तृष्णातडितचमकिछिनहीछिनप
हनिशियहतनजारो यहभवजलकलिमलहिगहेहैवोरत
सहसपुकारो सूरदासपतितनकोसंगीविरदहिनाथसम्हा
रो ॥१७१॥ रागटोडी ॥ गोविंदपदभजमनवचक्र
मकरि सुचिसुचिसहजसमाधिसाधिसठदीनवंधुकरुना
मयउरधरि मिथ्यावाददिवादछांडिसठविषयलोभमुदः
मोहैपरिहरि चरनप्रतापआनिउरअंतरऔरसकलसुख
यासुखतरहरि वेदनिकह्योसुमृतिहुभिभाष्योपावनपतित
नामहैनिजहरि, जाकेंसुजससुनतअरुसुमिरतजैहैपाप
वृंदतजिनरहरि परमउदारश्यामसुंदरवरसुखदातासं
तनहिततहरिधरि दीनदयालगुपालगोपपतिगावतगुनआ
वतढिगढरहरि अजहूंमूढचेतैंचहुंदिसितेंउपजीकली
अगनिझकझकरहरि जवजमजालपसारिपरेगोहरिवितु
कोनकरैगोधरहरि सूरकालवलव्यालग्रस्योजिनिश्रीप
तिचरनपरहिकिनिफरहरि नामप्रतापआनिसुहृदयम

हसकलविकारजाहिसबटरहरि ॥ १७२॥ रागपुरीया
धनाश्री ॥ मायादेखतहीजुगई नाहरिहितनहितूहि
तइनमेएकौतौनभई जोमधुमाखीसन्चिनिरंतरवनकी
ओटलु..ई व्याकुलहोतहरेज्योंसरवरआंखिनदूरिदई
सतसंतानसजनवनितारतिघनसमानउनहीं राखेसूर
पवनपाषंडहतिकरिजोंप्रीतिनहीं ॥ १७४॥ रागआ
सावरी ॥ वृथाहीजनमलियोसंसार कवहूंभक्तिनकी
नीहरिकीविषयलियेसिरभार जुगजुगजपतपनाहीकी
न्हेअल्पमितिआसार प्रगटेनरनहिंदुर्लभगयेजनमसवहा
र कामक्रोधमदलोभमोहमेहोनिशिदिनरहोजार सूर
हरिकोसुजसुगावहुजातेंमिटहिंभवभार ॥ १७५॥ राग
धनाश्री ॥ कायाहरिकेकामनआई भावभ[illegible]
रिजशसुनियतुतहांजातअलसाई लोभउत[illegible]
नोरथतहांसुनतउठिधाई जवलगश्यामअंग[illegible]
तअंधेज्योंभरमाई सूरदासभगवंतभजनविनविषय[illegible]
मविषखाई ॥ १७६॥ रागसोरठ ॥ ऐसीमूढ़तायामनकी
मनकी परिहरनामभगतसुरसरिताआसकरतओसन
की जोगकसीटिफटिकमेछांड़ीमानमनायोतनकी टूट
तदसननजानतरीरसमइअतिहिक्षुविअंगनकी धूमस
मूहनिरखिचातकज्योंतृषाहोतअतिघनकी नाहिनतहं
शीतलतादेखतहानिहोतलोचनकी कहलोंकहूंकुचाल
आपनीजानतहौगतिजनकी सूरदासप्रभुहरहुदुसहदुः
खलाजकरोनिजपनकी ॥ १७७॥ रागकेदारो ॥ तु
महिंअछतकहादुखदयाल दीनजानिकेहरतनाहिनेक
हाजिएवहुकाल सतछूटेधनधर्मगंवायोकहादिएमनिला
ल कनककंमांगितपद्धिजतदिनैदिनहारेरटतविहाल सू
रश्यामकोकरौनिहोरोचलतवेदकीचाल ॥ १७८॥ रा
गधनाश्री ॥ मोतेंऔरकौनहैपापी घातककुटिलच
वाईकपटीलोभमोहसंतापी लंपटधूतपूतकोड़ीकोविष
यवासजवआपी दुसहकर्मकीन्हेनिशिवासरकटुकव[illegible]

नआलापी सकमिकअपयच्छपकहोकरिनलाल एकमतिवारमुखिनकेसंगमेगमनऔरमनव्यापी नेपनितपधारेसुमिरततिनकीगतिमैंमापी सागकारमस्योजैसेंव्याधअजामिलवापी ॥१७९॥ नाश्री ॥ तुमतजिभूल्योभूल्योडोलत लालचरिदेवनिकेफिरतकपाटनिखोलत ज्योंनजिसरवसचाहेतवलगदुहुंकीप्रीति फलमागतहीहेतमुकरमुहदेवनकीरीति तजिकंचनहिकाचमनिअनुचितयामायाकेलीन्हों चारिपदारथकोप्रभुदातासोऊविसर्जनकीन्हों तुमकृपालकरुणामयकेशवअखिललोकके नायक सूरदासफिरिदृढकरिपकरेअवयेचरणसहायक॥ ॥१८०॥ रागधनाश्री ॥ ऐसेहिजनमवहुतवौरायो ।

हयो ॥ जोहरिचरणकमलतजिमनसंतोषनपायो जब नउवा कियोजलथलनवतवअनेकवपुधारो कामक्रोध ममतमहातमरचेअटलअघमादे प्रगटेविप्रगीधगणिकागजकेसिकंसखलतारे अघवकवृषभवकीधेनुकहतिव्यालहरनदुखटारे शंखचूडमुष्टिकप्रलंववधितृणावर्तसंघारे कालीदमनपियोदावानलभवजलजलधिउवारे जनदुखजानिजुगलद्रुमभंजनअतिआतुरह्वैधाये करगिरिधरिवासवमदमर्दनसंतनिसुखउपजाये रिपुकचग्रहनद्रुपदतनयातवशरनशरनकहिभाषी पांडववधूद्रुपदतनयाकीसभामांझपतिराखी मृतकजिवायदियेगुरुकेसुतव्याधपरमगतिपाई नंदवरुणभववंधनमोचनसूरपतितसरनाई ॥१८१॥ रागधनाश्री ॥ दयानिधितेरीगतिजानीनपरे अकरनकरनकरनअकरनजोकरनहिंकरनकरे जयअरुविजयपापकहकीन्हों ब्राह्मणश्रापदिवायो असुरयोनिताऊपरदीन्होधर्मजुकीनकरायो पितावचनमेटेसोपापीसोप्रह्लादहिकीन्हो ताकेकाजखंभसोंप्रकटेनृसिंहरूपतवलीन्हो यज्ञकरनवैरोचनकेसुतवेदविविधिविधिधर्मा तेतुमवांधिपतालपठायेकौ नदयानि